सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

बेईमान आदमी भी चाहता है कि, उसके साथ के आदमी ईमानदार रहे, यही ईमानदारी की ताक़त है... ।

अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–25 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, गुरुवार 12 फरवरी 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए,

दुर्लभ हॉर्नबिल संरक्षण : उदंती–सीतानदी में विकसित हो रहे प्राकृतिक उद्यान

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

हॉर्नबिल दुनिया के सबसे आकर्षक और अनोखे पक्षियों में से एक हैं। इनका विशाल आकार, बड़ी चोंच, आकर्षक और रंगीन पंखुड़ियाँ और आमतौर पर शोरगुल भरा व्यवहार इन्हें हर जगह आसानी से पहचान दिलाते हैं। इनके घोंसला बनाने की विचित्र आदतें भी कई विशेषताओं में से एक हैं जो हॉर्नबिल को इतना दिलचस्प बनाती हैं। छत्तीसगढ़ के उदंती-सीतानदी में दुर्लभ मालाबार पाइड हॉर्नबिल पक्षियों के संरक्षण के लिए विशेष प्राकृतिक उद्यान विकसित किए जा रहे हैं, जिन्हें हॉर्नबिल रेस्टोरेंट के रूप में तैयार किया जाएगा।

हॉर्नबिल को जंगल का किसान मानते हुए उनके विलुप्त होने के जोखिम को कम करने के लिए आवश्यक हैं कि हॉर्नबिल प्रजातियों के लिए घोंसलों की निगरानी, कृत्रिम घोंसले लगाने, अनुसंधान और स्थानीय समुदाय की भागीदारी (घोंसला गोद लेने का कार्यक्रम) के माध्यम से संरक्षण कार्य किया जाए। वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप के मार्गदर्शन तथा प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) अरुण कुमार पाण्डेय के नेतृत्व में उदंती-सीतानदी टाइगर रिजर्व जैव विविधता संरक्षण के क्षेत्र में

एक नई पहल कर रहा है।

यह रेस्टोरेंट किसी प्रकार का कृत्रिम निर्माण नहीं होगा, बल्कि जंगल और आसपास के क्षेत्रों में फलदार वृक्षों का प्राकृतिक समूह विकसित किया जाएगा। इसके अंतर्गत पीपल, बरगद तथा फाइकस प्रजाति के पौधे लगाए जाएंगे, जिनके फल हॉर्नबिल पक्षियों का प्रमुख आहार हैं। इस पहल का उद्देश्य इन पक्षियों को पूरे वर्ष प्राकृतिक भोजन उपलब्ध कराना और उनके सुरक्षित आवास को बढ़ावा देना है। हॉर्नबिल को घोंसला बनाने के लिए जरूरी पेड़ों को लगाने और उनकी निगरानी करने के प्रयास।

उल्लेखनीय है कि सामान्यतः पश्चिमी घाट क्षेत्र में पाए जाने वाले ये पक्षी अब उदंती-सीतानदी की अनुकूल जलवायु और हरियाली के कारण यहां अधिक संख्या में दिखाई देने लगे हैं। पहले जहां इनका दर्शन कभी-कभार होता था, वहीं अब सप्ताह में दो से तीन बार इनकी उपस्थिति दर्ज की जा रही है। हॉर्नबिल पक्षियों को फॉरेस्ट इंजीनियर या जंगल का प्राकृतिक माली भी कहा जाता है, क्योंकि ये फल खाने के बाद बीजों को दूर-दूर तक फैलाते हैं, जिससे वनों का प्राकृतिक विस्तार होता है। समुद्र तल से लगभग 800 से 1000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित उदंती-सीतानदी का पहाड़ी क्षेत्र इन पक्षियों के लिए उपयुक्त आवास सिद्ध हो रहा है।

इन दुर्लभ पक्षियों की सुरक्षा और निगरानी के लिए विशेष ट्रैकिंग टीमें गठित की गई हैं। वन्यजीव विशेषज्ञों के साथ स्थानीय प्रशिक्षित युवाओं को भी इसमें शामिल किया गया है, जो घोंसलों की सुरक्षा और नियमित निगरानी का कार्य कर रहे हैं। साथ ही ड्रोन तकनीक के माध्यम से शिकार गतिविधियों और वनाग्नि पर भी नजर रखी जा रही है। यह पहल पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ इको-टूरिज्म को भी बढ़ावा देगी, जिससे पर्यटक प्राकृतिक वातावरण में सुरक्षित दूरी से इन दुर्लभ पक्षियों को देख सकेंगे और क्षेत्र की जैव विविधता के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

खास-खबर

तेज प्रताप यादव फिर विवादों में

नवजात बच्ची को लेकर सोशल मीडिया पर दावे, तेज प्रताप ने सिरे से किया खंडन, वायरल मेडिकल प्रिस्क्रिप्शन से बढ़ी हलचल, साजिश का लगाया आरोप

संदीप सिंह / पटना

जनशक्ति जनता दल (जेजेडी) के प्रमुख तेज प्रताप यादव एक बार फिर गंभीर विवाद के केंद्र में आ गए हैं। इस बार मामला अनुष्का यादव की नवजात बेटी से जुड़ा है, जिसे लेकर सोशल मीडिया पर यह दावा किया जा रहा है कि बच्ची के पिता तेज प्रताप यादव हैं। हालांकि तेज प्रताप यादव ने इन दावों को सिरे से खारिज करते हुए इसे उनकी छवि धूमिल करने की सुनियोजित साजिश बताया है।

विवाद उस समय और गहरा गया जब अनुष्का यादव से जुड़ा एक मेडिकल प्रिस्क्रिप्शन सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। बताया जा रहा है कि यह पर्चा पटना के कंकड़बाग स्थित वरलीका मदरहुड हॉस्पिटल का है, जिस पर 7 अक्टूबर 2025 की तारीख दर्ज है। डॉक्टर ऋतुराज द्वारा जारी इस पर्चे में मरीज के विवरण वाले कॉलम में पति या अभिभावक के रूप में तेज प्रताप यादव का नाम लिखा हुआ दिखाई देता है। इसी दस्तावेज के सामने आने के बाद राजनीतिक गलियारों में हलचल तेज हो गई।

सोशल मीडिया पर यह भी दावा किया जा रहा है कि अनुष्का यादव डॉक्टर ऋतुराज के परामर्श में थीं और इंटरनेट पर डॉक्टर के साथ तेज प्रताप यादव की तस्वीरें भी वायरल हो रही हैं, जिन्हें इस मामले से जोड़कर देखा जा रहा है। हालांकि इन दावों और दस्तावेजों की अब तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। तेज प्रताप यादव ने प्रेस वार्ता कर स्पष्ट कहा कि उनका न तो अनुष्का यादव से कोई संबंध है और न ही नवजात बच्ची से। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोग जानबूझकर उनका नाम घसीटकर उन्हें बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। तेज प्रताप ने इस पूरे प्रकरण को राजनीतिक षड्यंत्र बताते हुए कहा कि उन्हें विश्वासघात का शिकार बनाया जा रहा है।

उन्होंने आरजेडी के कुछ नेताओं पर भी सीधा आरोप लगाया और कहा कि मुकेश रौशन, संजय यादव और सुनील सिंह जैसे लोग इस साजिश के पीछे हैं। तेज प्रताप यादव ने यह भी संकेत दिए कि वे इस मामले में कानूनी कार्रवाई करेंगे और जरूरत पड़ी तो प्रधानमंत्री से भी मुलाकात करेंगे। इधर कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि अनुष्का यादव को कंकड़बाग स्थित बोधी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था, जहां 8 फरवरी 2026 को उन्होंने एक बेटी को जन्म दिया। हालांकि अस्पताल प्रबंधन की ओर से इस संबंध में कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। इस पूरे घटनाक्रम के बाद बिहार की राजनीति में सरगर्मी बढ़ गई है। समर्थक इसे राजनीतिक बदनाम करने की कोशिश बता रहे हैं, जबकि विरोधी सवाल उठा रहे हैं। फिलहाल मामला सोशल मीडिया दावों, वायरल दस्तावेजों और तेज प्रताप यादव के खंडन के बीच उलझा हुआ है। सच्चाई क्या है, यह जांच और आधिकारिक पुष्टि के बाद ही साफ हो पाएगा।

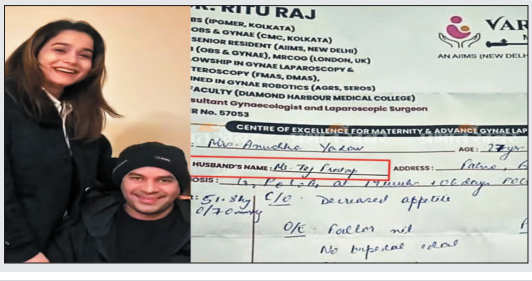

जेल से रिहाई के बाद दिल्ली दरबार में कवासी लखमा-चैतन्य की दस्तक

छत्तीसगढ़ की सियासत में नई हलचल, क्या शुरू हुआ 'राजनीतिक अभिषेक'?

आलोक तिवारी / भिलाई

शराब घोटाला मामले में एक वर्ष तक रायपुर सेंट्रल जेल में बंद रहे पूर्व आबकारी मंत्री और आदिवासी नेता कवासी लखमा को सुप्रीम कोर्ट से अंतरिम जमानत मिलने के बाद छत्तीसगढ़ की राजनीति में अचानक हलचल तेज हो गई है। रिहाई के तुरंत बाद लखमा का दिल्ली दौरा और कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात ने कई राजनीतिक संकेत दे दिए हैं।

राजनीतिक चर्चाओं की वजह क्या?

यह मुलाकात सामान्य शिष्टाचार से कहीं ज्यादा मानी जा रही है। गौरतलब है कि शराब घोटाला मामले में चैतन्य बघेल (बिट्टू) को भी जेल जाना पड़ा था और उन्हें भी जमानत मिली है। उनकी रिहाई के समय रायपुर से भिलाई तक शक्ति प्रदर्शन जैसा दृश्य देखने को मिला था। इसके विपरीत, कवासी लखमा की रिहाई के दौरान कांग्रेस के बड़े नेता दूरी बनाते नजर आए थे। इतना ही नहीं, लखमा ने रिहाई के बाद भाजपा नेता और उपमुख्यमंत्री अरुण साव की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा कर राजनीतिक हलकों में नई चर्चा छेड़ दी थी।

सशर्त जमानत और दिल्ली की सक्रियता

लखमा को मिली अंतरिम जमानत सशर्त है और उन्हें छत्तीसगढ़ में रहने की अनुमति नहीं है। ऐसे में उनका दिल्ली सक्रिय होना राजनीतिक रूप से और महत्वपूर्ण हो जाता है।

क्या पाटन से मैदान में उतरेंगे बिट्टू?

चर्चा है कि भूपेश बघेल इन दिनों राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय हैं और उन्हें राज्यसभा भेजे जाने की अटकलें भी तेज हैं। यदि ऐसा होता है तो पाटन विधानसभा सीट खाली हो सकती है। ऐसी स्थिति में चैतन्य बघेल के पाटन से चुनाव मैदान में उतरने की संभावना जताई जा रही है।

भिलाई-3 चरोदा भी चर्चा में

सियासी गलियारों में यह चर्चा भी गर्म है कि भिलाई-3 चरोदा नगर पालिक निगम का महापौर पद ओबीसी वर्ग के लिए आरक्षित है। ऐसे में पूर्व मुख्यमंत्री के ओएसडी रहे मनीष बंछोर के अलावा चैतन्य बघेल का नाम महापौर पद के संभावित दावेदार के रूप में भी लिया जा रहा है। हालांकि, अभी तक कांग्रेस की ओर से कोई अधिकृत घोषणा नहीं हुई है।

संगठन सृजन अभियान के बीच मुलाकात का महत्व

गौरतलब है कि कांग्रेस इन दिनों देशभर में संगठन सृजन अभियान चला रही है। 10 फरवरी को दिल्ली में नवनियुक्त जिला कांग्रेस अध्यक्षों की बैठक हुई, जिसे राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे और राहुल गांधी ने संबोधित किया। ऐसे समय में लखमा-बघेल परिवार की शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात को संगठनात्मक पुनर्संरचना और भविष्य की राजनीतिक रणनीति से जोड़कर देखा जा रहा है।

कवासी लखमा की रिहाई, दिल्ली दरबार में उपस्थिति, चैतन्य बघेल की सक्रियता और हरीश लखमा की मौजूदगी–इन सबने मिलकर छत्तीसगढ़ की राजनीति में नए समीकरणों की आहट दे दी है।

क्या यह केवल शिष्टाचार मुलाकात थी? या फिर छत्तीसगढ़ कांग्रेस में नई पीढ़ी के औपचारिक प्रवेश का संकेत? फिलहाल जवाब भविष्य के राजनीतिक फैसलों में छिपा है लेकिन हलचल साफ है– छत्तीसगढ़ की सियासत करवट ले रही है।

रायपुर से दिल्ली तक का राजनीतिक संदेश

रिहाई के बाद कवासी लखमा पहले पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के रायपुर निवास पहुंचे। यहां चैतन्य बघेल (बिट्टू) ने उनका स्वागत किया और चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया, जबकि भूपेश बघेल की पत्नी मुक्तेश्वरी बघेल ने आरती उतारकर अभिनंदन किया। इसके बाद लखमा अपने पुत्र हरीश लखमा के साथ दिल्ली रवाना हुए। दिल्ली में भूपेश बघेल, चैतन्य बघेल, कवासी लखमा और हरीश लखमा ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, सांसद प्रियंका गांधी, महासचिव संगठन केसी वेणुगोपाल और प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट से मुलाकात की।

क्या बेटों की एंट्री की तैयारी?

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह पूरा घटनाक्रम केवल मुलाकात नहीं, बल्कि नई पीढ़ी को आगे लाने की रणनीति का हिस्सा हो सकता है। हरीश लखमा पहले से जिला पंचायत और जिला कांग्रेस कमेटी में सक्रिय हैं। चैतन्य बघेल अब तक सक्रिय राजनीति में औपचारिक रूप से नहीं उतरे थे, लेकिन पाटन क्षेत्र में उनकी सक्रियता सीमित रूप से रही है। दिल्ली में शीर्ष नेतृत्व से परिचय और साथ उपस्थिति को राजनीतिक अभिषेक की शुरुआत के तौर पर देखा जा रहा है।

मुलाकात

बीएसपी से जुड़े मसलों को लेकर हुई सार्थक चर्चा, जल्द आएगा परिणाम

सांसद बघेल और प्रेम प्रकाश की केंद्रीय इस्पात मंत्री से की मुलाकात

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

दुर्ग लोकसभा सांसद विजय बघेल और छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष प्रेम प्रकाश पाण्डेय ने नई दिल्ली में केंद्रीय इस्पात मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी से शिष्टाचार भेंट कर भिलाई इस्पात संयंत्र से जुड़े विभिन्न वर्गों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया।

इस दौरान दोनों वरिष्ठ नेताओं ने रिटेंशनधारियों, थर्ड पार्टी कमर्चारियों तथा स्थानीय व्यापारियों से जुड़ी लंबित और जटिल समस्याओं के संबंध में विस्तृत ज्ञापन सौंपते हुए मंत्री से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की।

स्थानीय हितों की रक्षा का मुद्दा उठाया : सांसद विजय बघेल ने कहा कि भिलाई इस्पात संयंत्र केवल एक औद्योगिक इकाई नहीं, बल्कि पूरे दुर्ग-भिलाई अंचल की आर्थिक धुरी है। संयंत्र से जुड़े हजारों परिवारों की आजीविका इन मुद्दों से प्रभावित हो रही है, ऐसे में केंद्र सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक है। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष प्रेम प्रकाश पाण्डेय ने भी स्पष्ट किया कि स्थानीय व्यापारियों और ठेका एजेंसियों को समय पर भुगतान, कार्य आवंटन में पारदर्शिता और श्रमिक हितों की सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए।

मंत्री ने दिया आश्वासन

केंद्रीय इस्पात मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी ने दोनों नेताओं की बातों को गंभीरता से सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश देने और समस्याओं के समाधान हेतु सकारात्मक पहल का आश्वासन दिया।

क्षेत्र की अपेक्षाएं केंद्र से जुड़ीं

इस मुलाकात को दुर्ग-भिलाई अंचल के औद्योगिक और व्यापारिक हितों के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। स्थानीय हितधारकों को उम्मीद है कि केंद्र स्तर पर हुई इस पहल से लंबित मुद्दों का शीघ्र समाधान होगा और औद्योगिक गतिविधियों में नई गति आएगी।

खेल प्रोत्साहन राशि: 16 तक आवेदन

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

जीनियस खेल एकेडमी के संयोजक श्रेणिक डाकलिया शतरंज टेलीग्राफ चैंपियन ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि छत्तीसगढ़ शासन के खेल एवं युवा कल्याण विभाग ने प्रतिभावान खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन के लिए छत्तीसगढ़ क्रीड़ा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-26 हेतु खेलवृत्ति के आवेदन आमंत्रित किए हैं। इस योजना का उद्देश्य उन खिलाड़ियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है, जिन्होंने पिछले वर्ष (2024-25) में अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवाया है। विभाग द्वारा जारी सूचना के अनुसार, ओलंपिक, कॉमनवेल्थ, एशियाड और नेशनल गेम्स में शामिल खेलों की राष्ट्रीय स्पर्धाओं में पदक जीतने वाले खिलाड़ी इस स्कॉलरशिप के लिए पात्र होंगे। खिलाड़ियों की उपलब्धि के अनुसार विभाग ने पुरस्कार राशि का निर्धारण अलग-अलग वर्गों में किया है। सीनियर वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को क्रमशः 75 हजार, 50 हजार और 40 हजार रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। जूनियर वर्ग के पदक विजेताओं को क्रमशः 60 हजार, 40 हजार और 30 हजार रुपये, तथा सब-जूनियर वर्ग के खिलाड़ियों को क्रमशः 50 हजार, 25 हजार और 20 हजार रुपये की खेलवृत्ति दी जाएगी। यह राशि केवल उन खिलाड़ियों को मिलेगी जो छत्तीसगढ़ के मूल निवासी हैं और जिन्होंने स्पर्धा में राज्य का प्रतिनिधित्व किया है।

संट्रल जोन में सख़्त संदेश शटर की आड़ में चल रहा था देर रात खेल, 6 गिरफ्तार

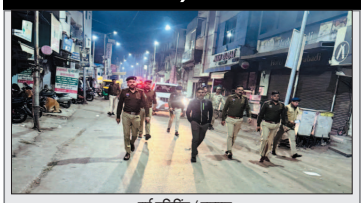

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राजधानी में रात्रिकालीन संदिग्ध गतिविधियों पर लगाम कसने के लिए रायपुर कमिश्नरेट के सेंट्रल जोन ने सख़्त रुख अख्तियार कर लिया है। डीसीपी सेंट्रल जोन, आईपीएस उमेश प्रसाद गुप्ता के स्पष्ट निर्देश और सख़्त नेतृत्व का असर मंगलवार देर रात देखने को मिला, जब निर्धारित समय के बाद शटर गिराकर चोरी-छिपे सामान बेचने और संदिग्ध लेन-देन में शामिल छह लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

उल्लेखनीय है कि कार्रवाई से एक रात पहले स्वयं डीसीपी सेंट्रल जोन ने सिटी कोतवाली क्षेत्र का औचक रात्रिकालीन निरीक्षण किया था। निरीक्षण के दौरान बंद शटरों के सामने संदिग्ध रूप से खड़े व्यक्तियों और नियमों की अनदेखी पर उन्होंने नाराजगी जताते हुए तत्काल कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए थे। डीसीपी के निर्देशों के पालन में एडिशनल डीसीपी तारकेश्वर पटेल एवं थाना प्रभारी सिटी कोतवाली निरीक्षक सतीश सिंह अहिरवार के नेतृत्व में बैजनाथपारा क्षेत्र में विशेष गश्त की गई।

गश्त के दौरान पाया गया कि तीन दुकानदार देर रात निर्धारित समय के बाद शटर गिराकर चोरी-छिपे ग्राहकों को सामान उपलब्ध करा रहे थे। वहीं तीन अन्य व्यक्ति बंद दुकानों के सामने संदिग्ध रूप से लेन-देन करते मिले। पुलिस ने तत्काल घेराबंदी कर सभी छह व्यक्तियों को मौके से पकड़ लिया। थाना सिटी कोतवाली में इस्तगासा क्रमांक 32/32/2026 के तहत भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 170, 126, 135(3) के अंतर्गत तीन दुकानदार और तीन संदिग्ध खरीदारों को गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।

गिरफ्तार आरोपी में रमीज रजा, 30 वर्ष, निवासी बैजनाथपारा चौक, केशव देवांगन, 24 वर्ष, निवासी बंजारी नगर, वासु राजपूत, 20 वर्ष, निवासी हन्तामल कॉलोनी, सैय्यद मंदिनी, 21 वर्ष, निवासी सुभाष नगर, दुर्ग, फरहान खान, 20 वर्ष, निवासी शास्त्री मार्केट और मोहम्मद इम्तियाज, 36 वर्ष, निवासी बैजनाथपारा चौक शामिल हैं। रायपुर पुलिस ने स्पष्ट किया है कि रात्रिकाल में शटर गिराकर किसी भी प्रकार की अवैध या संदिग्ध गतिविधि बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सेंट्रल जोन में कानून-व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों पर त्वरित और सख़्त कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी। डीसीपी सेंट्रल जोन की इस कार्रवाई को शहर में अनुशासन स्थापित करने की दिशा में निर्णायक कदम माना जा रहा है। राजधानी में अब शटर के पीछे कुछ भी छिपा रह पाना आसान नहीं होगा।

जोन-3 में निर्माण और सफाई कार्यों का किया गया निरीक्षण

भिलाई। जोन-3 क्षेत्रांतर्गत नव निर्माण सुलभ शौचालय, केयरटेकर रूम निर्माण, सर्कुलर मार्केट, जवाहर मार्केट, सब्जी मार्केट का निरीक्षण कार्यपालन अभियंता अनिल सिंह द्वारा किया गया। जोन में चल रहे कार्यो को और बेहतर करने आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

कार्यपालन अभियंता अनिल सिंह ने वार्ड क्रं. 37 में डी.एम.एफ मद से नव निर्माण सुलभ शौचालय का निरीक्षण किये। इस शौचालय के निर्माण होने से सैकड़ो नागरिको का सुविधा मिलेगी। रविदास नगर सब्जी मंडी सुलभ इंटरनेशनल शौचालय में अतिरिक्त केयरटेकर के लिए रूम निर्माण किया जा रहा है जिसका निरीक्षण किया गया। नागरिको को किसी प्रकार की असुविधा होने पर केयरटेकर द्वारा तत्काल उसका मौके पर निराकरण कर सके। सर्कुलर, जवाहर, अनाज, सब्जी मार्केट की साफ-सफाई व्यवस्था का जायजा किया गया है। दुकानों के सामने एवं सड़को पर फैले कचरे को एकत्र कर एस.एल.आर.एम. सेंटर में खाद बनाया जा सके। निरीक्षण के दौरान सहायक अभियंता नितेश मेश्राम, उप अभियंता दीपक देवांगन, सहायक राजस्व अधिकारी बसंत देवांगन, जोन स्वास्थ्य अधिकारी बीरेन्द्र बंजारे, स्वच्छता निरीक्षक चुड़ामणी यादव, स्वास्थ्य एवं राजस्व विभाग के सुपरवाईजर उपस्थित रहे।

संभाग आयुक्त राठौर ने किया पशु चिकित्सा अधिकारी को निलंबित

दुर्ग। दुर्ग संभाग के आयुक्त सत्यनारायण राठौर ने छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण तथा अपील) नियम-1966 के नियम-9 (1)(क) के अंतर्गत डॉ. चन्द्रशेखर अम्बुलकर, पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ एवं विकासखण्ड पशु चिकित्सा अधिकारी मोहला को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया है। निलंबन अवधि में डॉ. अम्बुलकर का मुख्यालय कार्यालय उप संचालक, पशु चिकित्सा सेवायें, जिला राजनांदगांव निर्धारित किया गया है। इस अवधि के दौरान उन्हें नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ते की पात्रता होगी।

ज्ञात हो कि कलेक्टर मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी के प्रतिवेदन के आधार पर डॉ. अम्बुलकर के विरुद्ध शासकीय कार्यों में घोर लापरवाही, दायित्वहीनता और स्वेच्छाचारिता बरतने के गंभीर आरोप पाए गए हैं। जाँच के दौरान यह पाया गया कि वे जिला स्तरीय समीक्षा बैठकों में अनुपस्थित रहते थे और विभाग की अद्यतन जानकारी देने में असमर्थ रहे। इसके अतिरिक्त, आकस्मिक निरीक्षण के दौरान वे बिना किसी सूचना के मुख्यालय से नदारद मिले, और मोबाइल लोकेशन के आधार पर उनका महाराष्ट्र राज्य में होना पाया गया। धान उपार्जन केंद्र भोजटोला में नोडल अधिकारी के रूप में ड्यूटी लगाए जाने के बावजूद उन्होंने वहां अपनी उपस्थिति नहीं दी और शासकीय योजनाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देशों की भी निरंतर अवहेलना की। प्रशासन द्वारा जारी कारण बताओ सूचना का उनके द्वारा दिया गया उत्तर संतोषजनक नहीं पाया गया, जिसे कर्तव्य निर्वहन में गंभीर कदाचार मानते हुए संभाग आयुक्त राठौर ने डॉ. चन्द्रशेखर अम्बुलकर को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया है।

शहर में निकलेगी पहली बार फाल्गुन एकादशी पर खाटू धाम जैसी विशाल निशान यात्रा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

फाल्गुन मास की पावन ग्यारस को लेकर दुर्ग में श्री श्याम फाल्गुन निशान यात्रा का आयोजन किया जायेगा। आयोजित होने वाले श्री श्याम निशान यात्रा 2026 की तैयारियां पूरे जोर-शोर से चल रही हैं। हर वर्ष की तरह इस बार भी यह आयोजन श्रद्धा, भक्ति और सेवा का अनुपम संगम बनने जा रहा है। इसका उद्देश्य उन श्याम भक्तों को भी खाटू श्याम की अनुभूति कराना है, जो किसी कारणवश सीकर स्थित खाटू धाम तक नहीं पहुँच पाते हैं। ऐसे श्रद्धालुओं के लिए दुर्ग में भी खाटू धाम की परंपरा, रीति-रिवाज और भव्यता के अनुरूप दुर्ग में भी निशान यात्रा निकाली जावेगी, ताकि दुर्ग में ही बाबा श्याम के सजीव दर्शन और आशीर्वाद का लाभ ले सके।

निशान यात्रा आयोजक समिति के योगेन्द्र शर्मा बंटी ने बताया कि छत्तीसगढ़ की धार्मिक नगरी दुर्ग अब भक्ति के रंग में रंगने को तैयार है। बाबा श्याम के भक्तों के लिए इस साल का फाल्गुन मास बेहद खास होने वाला है। शहर में पहली बार खाटू श्याम के धाम की तर्ज पर एक विशाल और भव्य फाल्गुन एकादशी निशान यात्रा का आयोजन किया जा रहा है, जिसे लेकर श्याम प्रेमियों में जबरदस्त क्रेज देखने को मिल रहा है।

आमतौर पर फाल्गुन के महीने में लाखों भक्त सीकर के खाटू धाम की ओर रुख करते हैं, लेकिन इस बार दुर्ग के आयोजकों ने शहर में ही वैसा ही दिव्य वातावरण तैयार करने का बीड़ा उठाया है। खाटू धाम जैसी ही भव्य

निशान यात्रा, फूल इत्र रंग की बरसात के साथ बाबा का रथ घोड़े बग्गी के साथ साथ सुंदर एवं मधुर गीतों के साथ भक्तों की विशाल निशान यात्रा रहेगी मुख्य आकर्षण होंगे।

निशान यात्रा सैकड़ों भक्त हाथों में श्याम बाबा का निशान लेकर शहर के मुख्य मार्गों से गुजरेंगे। यात्रा के दौरान जगह-जगह पुष्प वर्षा इत्र वर्षा की तैयारी की जा रही है। बंटी शर्मा ने बताया कि हारे का सहारा, भगवान श्री कृष्ण के कलयुगी अवतार, लखदातार, शीश के दानी कहे जाने वाले बाबा खाटू श्यामजी के भक्त केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में हैं। राजस्थान में स्थित बाबा के मंदिर में बाबा के दर्शन के लिए लंबी लंबी कतारें लगती हैं।

"बहुत से भक्तजब मन्नत मांगने बाबा खाटूश्यामजी के मंदिर जाते हैं, तो वह भक्त बाबा के दरबार में माथा टेक मन्नत मांगते हैं और बाबा से प्रार्थना करते है कि है लखदातार, हारे का सहारा मेरी यह मन्नत पूरी होने पर मैं आपके दरबार पर निशान चढ़ाने वापस खाटू नागरी आऊंगा। कई ऐसे भक्त भी होते हैं जो मन्नत पूरी होने से पहले भी बाबा के दरबार पर निशान चढ़ा देते हैं। खाटू श्यामजी को निशान चढ़ाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है और यह निशान बेहद पवित्र माना जाता है।

खाटू श्याम पर जो निशान चढ़ाया जाता है, उसे झंडा ध्वज कहते हैं। सनातन धर्म में ध्वज को विजय के प्रतीक के तौर पर माना जाता है। साथ ही बता दें, यह निशान श्याम बाबा द्वारा दिया गया बलिदान और दान का प्रतीक माना जाता है। श्याम बाबा ने भगवान कृष्ण के कहने पर धर्म की जीत के लिए अपना शीश समर्पित कर दिया था और युद्ध का श्रेय भगवान कृष्ण को दिया था। श्याम बाबा के ध्वज का रंग केसरिया, नारंगी और लाल रंग का होता है, निशान पर कृष्ण और श्याम बाबा के चित्र और मंत्र अंकित होते हैं, साथ ही साथ निशानों पर नारियल और मोर पंख भी अंकित होता है। मान्यता है कि इस निशान को चढ़ाने से सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और जीवन में सब मंगल ही मंगल रहता है। खाटू श्याम पर ध्वज चढ़ाने से पहले उसकी विशेष पूजा अर्चना की जाती है और खाटू श्याम की यात्रा के समय भक्त उस ध्वज को अपने हाथ में ही रखते हैं। निशान यात्रा में नंगे पांव चलकर भगवान के मंदिर तक पहुंचकर निशाना चढ़ाना बहुत उत्तम माना जाता है।

बंटी शर्मा ने बताया कि दुर्ग में निकलने वाली भव्य निशान यात्रा की तैयारी के पूर्व आयोजक समिति द्वारा सबसे पहले अपने नगर के देवी-देवताओं की पूजा अर्चना एवं सभी भगवान को निशान यात्रा का आमंत्रण दिया गया, शहर के प्रमुख मंदिर जिसमें सत्ती माता मंदिर दुर्गा मंदिर, लंगूरवीर मंदिर श्याम मंदिर राम मंदिर सिद्धि विनायक गणेश मंदिर राधा कृष्ण मंदिर रामदेव बाबा मंदिर एवं शहर के अन्य मंदिरों में समिति के सदस्यों ने सभी देवी देवताओं का आह्वान करते हुए सभी भगवान को निशान यात्रा में आशीर्वाद देने हेतु आमंत्रित किया गया।

सभी भगवान का आह्वान करने के पश्चात निशान यात्रा की तैयारी पूरे तरह से प्रारंभ कर दी गई है, गुजरात से बाबा श्याम का आकर्षित एवं अलौकिक ध्वज मंगवाया गया है जिसे श्री सत्तीचौरा माँ दुर्गा मंदिर में सभी श्याम भक्त तैयार करेंगे। शहर में निशान यात्रा को लेकर धार्मिक माहौल बना हुआ है सभी समाज के लोग इसमें अपना सहयोग एवं साथ दे रहे है।

खैरागढ़ नगरपालिका क्षेत्र में फिर दूषित पानी का खतरा!

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

नगरिया प्रशासन की लापरवाही के चलते वाडवासी दूषित और बदबूदार पानी पिने मजबूर। नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 17 दाऊचौरा में बुधवार शाम नल खुलते ही घरों में गंदा, बदबूदार और कीड़ेयुक्त पानी पहुंचने से वाडवासियों में भारी आक्रोश और दहशत का माहौल बन गया। दूषित पानी के कारण लोगों को पीने के पानी के लिए हैंडपंप का सहारा लेना पड़ा वार्ड के कई परिवारों ने स्वास्थ्य खतरे को लेकर चिंता जताई है।

स्थानीय नागरिकों का आरोप है, कि वार्ड के कई स्थानों पर नाली के अंदर ही पाइपलाइन डाली गई है, वहीं कुछ लोगों द्वारा नाली से सीधे पाइप जोड़कर अवैध कनेक्शन लिया गया है। पाइपलाइन में लीकेज होने के कारण नाली का गंदा पानी मुख्य सप्लाई लाइन

में मिलकर घरों तक पहुंच रहा है। संक्रमण और बीमारी फैलने का खतरा लगातार बढ़ रहा है। वाडवासियों ने बताया कि क्षेत्र की नालियों की नियमित सफाई नहीं होती जिससे अक्सर नालियां जाम रहती हैं और बदबू फैलती रहती है। जीवन देवांगन के घर से आगे बनी नाली में लंबे समय से गंदा पानी जमा है और समय-समय पर सफाई नहीं होने से स्थिति और भी खराब हो गई है। वार्ड के लोगों का आरोप है, कि वार्ड के जनप्रतिनिधि सफाई और पानी की समस्या को लेकर गंभीरता नहीं दिखा रहे हैं।

गौरतलब है कि कुछ माह पहले वार्ड क्रमांक 16 में भी इसी तरह दूषित पानी की समस्या सामने आई थी, जिसमें कई लोग बीमार होकर खैरागढ़ सिविल अस्पताल पहुंचे थे और स्वास्थ्य विभाग को वार्ड में विशेष स्वास्थ्य शिविर लगाना पड़ा था। इससे पहले जिले में दूषित पानी के कारण एक मौत तक हो चुकी है, जिससे लोगों में डर और ज्यादा बढ़ गया है। अब वार्ड क्रमांक 17 में भी ऐसी ही स्थिति बनने से लोग आशंकित हैं, कि यदि जल्द सुधारात्मक कदम नहीं उठाए गए तो बीमारी फैलने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। वाडवासियों ने नगर पालिका प्रशासन से तत्काल पानी की जांच, पाइपलाइन सुधार और नालियों की नियमित सफाई सुनिश्चित करने की मांग की है, ताकि किसी बड़ी जनस्वास्थ्य समस्या को समय रहते रोका जा सके।

विधायक यशोदा की उपस्थिति में हुई मुख्यमंत्री कन्या विवाह

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा ने केसीजी जिले के स्थानीय केकती बाड़ी मैदान, छुईखदान में आयोजित 'मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना' के अंतर्गत भव्य सामूहिक विवाह कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुईं। इस गरिमामयी समारोह में कुल 115 जोड़ों का विवाह वैदिक मंत्रोच्चार और रीति-रिवाजों के साथ संपन्न हुआ।

नवदंपतियों को दिया आशीर्वाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा ने नवविवाहित जोड़ों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और उन्हें सुखद दांपत्य जीवन का आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा, सामूहिक विवाह न केवल फिजूलखर्ची को रोकता है, बल्कि समाज में एकता और समरसता का संदेश भी देता है। हर्षोल्लास का माहौल केकती बाडी मैदान में आयोजित इस भव्य समारोह में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के सामुहिक विवाह में क्षेत्र के जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी और बड़ी संख्या में वर-वधू पक्ष के परिजन उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम अंतर्गत जिले में सामूहिक दवा सेवन अभियान का हुआ शुभारंभ

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2027 तक छत्तीसगढ़ राज्य सहित देश के सभी राज्यों को फाइलेरिया मुक्त किए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी क्रम में राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत मंगलवार 10 फरवरी से 25 फरवरी 2026 तक जिले में सामूहिक दवा सेवन (एम.डी.ए.) अभियान संचालित किया जा रहा है।

अभियान का जिला स्तरीय शुभारंभ कलेक्टर सभागृह में कलेक्टर इन्द्रजीत सिंह चंद्रवाल द्वारा स्वयं दवा का सेवन कर किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर ने जिलेवासियों से अपील की कि वे फाइलेरिया (हाथीपांव) जैसे गंभीर रोग से बचाव हेतु शासन द्वारा प्रदत्त दवाओं का अनिवार्य रूप से सेवन करें। कलेक्टर इन्द्रजीत सिंह चंद्रवाल ने कहा कि फाइलेरिया मच्छर के काटने से फैलने वाला गंभीर रोग है, जिसका वर्तमान में कोई प्रभावी उपचार उपलब्ध नहीं है,

इसलिए इससे बचाव अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने जिले के सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ अभियान के सफल क्रियान्वयन हेतु सहयोग करने के निर्देश दिए।

इस अभियान के अंतर्गत विधानसभा खैरागढ़ की विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा तथा जिला भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी के चेयरमैन एवं जिला पंचायत उपाध्यक्ष विक्रांत सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा जिले के विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में स्वयं फाइलेरिया से बचाव हेतु दवा का सेवन किया गया तथा आम नागरिकों से भी दवा सेवन करने की अपील की गई।

कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत प्रेम कुमार पटेल, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आशीष शर्मा, जिला नोडल अधिकारी एवं बीएमओ डॉ. विवेक बिसेन, जिला कार्यक्रम प्रबंधक सोनल ध्रुव, वी.बी.डी. टेक्निकल सुपरवाइजर विवेक मेश्राम, आर.एच.ओ. संतोष बर्वे, आर.एच.ओ. युवराज वर्मा सहित स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।।

जिला खैरागढ़-छुईखदान-गंडई अंतर्गत दोनों विकासखंडों की कुल 4,36,943 जनसंख्या में से अनुमानित 3,93,249 योग्य व्यक्तियों को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं मितानिनों द्वारा अपने समक्ष फाइलेरिया से बचाव हेतु दवा सेवन कराया जाएगा। अभियान के तहत पूरे जिले में 810 प्रशिक्षित दवा प्रशासक दल, 806 बूथ तथा 16 स्वास्थ्य केंद्रों में एम.डी.ए. कॉर्नर स्थापित किए गए हैं। बिहान समूह द्वारा जनजागरूकता एवं प्रचार-प्रसार में सक्रिय सहयोग किया जा रहा है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सोमवार 10 से गुरुवार 12 फरवरी 2026 तक आंगनबाड़ी केंद्रों, स्कूलों एवं शैक्षणिक संस्थानों में बूथ लगाकर दवा सेवन कराया जाएगा। शुक्रवार 13 से सोमवार 23 फरवरी 2026 तक घर-घर भ्रमण कर समुदाय स्तर पर दवा सेवन कराया जाएगा, जबकि मंगलवार 24 एवं बुधवार 25 फरवरी 2026 को छूटे हुए व्यक्तियों को दवा सेवन कराया जाएगा। इसके अतिरिक्त सोमवार 10 से बुधवार 25 फरवरी 2026 तक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों एवं निजी चिकित्सालयों की ओ.पी.डी. के समीप एम.डी.ए. कॉर्नर के माध्यम से भी दवा सेवन कराया जाएगा। इस 15 दिवसीय अभियान के अंतर्गत 2 वर्ष से कम आयु के बच्चों, गर्भवती महिलाओं एवं गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों को छोड़कर अन्य सभी पात्र व्यक्तियों को आयु अनुसार डाई-एथाइल-कार्बामैजिन (डी.ई.सी.) एवं एलबेंडाजोल की दवाएं निःशुल्क सेवन कराई जाएंगी। कार्यक्रम के अंत में अधिकारियों, कर्मचारियों एवं जनप्रतिनिधियों ने संयुक्त रूप से जिलेवासियों से अपील की कि वे स्वयं दवा का सेवन करें तथा अपने परिवार, रिश्तेदारों एवं समुदाय के अन्य लोगों को भी दवा सेवन हेतु प्रेरित करें, जिससे जनभागीदारी से जिले को फाइलेरिया मुक्त बनाया जा सके।

आवासीय और व्यावसायिक रिक्त भूखण्डों का 30 वर्षीय लीज

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा विभिन्न आवासीय/व्यावसायिक योजनाओं में आवासीय/व्यावसायिक प्रयोजन हेतु रिक्त 100 भूखण्डों का अंतरण 30 वर्षीय लीज पर दिया जा रहा है। निविदा/प्रस्थापन आनलाईन पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in के माध्यम से आमंत्रित की गई है। रिक्त भूखण्डों के निविदा की अवधि का विवरण निम्नानुसार है।

योजना का नाम मोतीलाल नेहरू नगर पूर्व आवासीय योजना ब्लाक ई भूखण्ड क्रं. 2 आकार 178 वर्ग मीटर, ब्लाक ई भूखण्ड क्रं. 5 आकार 177.60 वर्ग मीटर, ब्लाक डी भूखण्ड क्रं. 3 आकार 180 वर्ग मीटर, ब्लाक सी भूखण्ड क्रं. 8 आकार 216 वर्ग मीटर, ब्लाक 90 भूखण्ड क्रं. 5 व 7 आकार 135 वर्ग मीटर, ब्लक जे भूखण्ड क्रं. 5 आकार 63 वर्ग मीटर, ब्लाक के

भूखण्ड क्रं. 4, 9 एवं 10 आकार 63 वर्ग मीटर का है। दक्षिण गंगोत्री व्यवसायिक योजना ब्लाक 5 ए भूखण्ड क्रं. 6 व 7 आकार 33.75 वर्ग मीटर। मदर टेरेसा नगर आवासीय योजना ब्लाक 31 भूखण्ड क्रं. 2 एवं 3 आकार 216 वर्ग मीटर। प्रियदर्शिनी परिसर पश्चिम व्यवसायिक योजना ब्लाक 2 भूखण्ड क्रं. 3, 4, 5 एवं 6 आकार 72 वर्ग मीटर। प्रियदर्शिनी परिसर, संजय नगर तालाब के पास में जी. ई. रोड सुपेला में 14950 वर्ग मीटर है।

बसंत विहार आवासीय योजना ब्लाक 1 टाइप-बी एम आईजी-1 भूखण्ड क्रं. 1 से 14 आकार 216 वर्ग मीटर। ब्लाक 2 टाईप-बी एम आईजी-1 भूखण्ड क्रं. 1 से 16 आकार 216 वर्ग मीटर। ब्लाक 5 टाईप-डी एल आईजी-1 भूखण्ड क्रं. 1 से 11 एवं 13 से 24 आकार 135 वर्ग मीटर। ब्लाक 6 टाईप-डी एल आईजी-1 भूखण्ड क्रं. 2 से 10 एवं 13 से 22 आकार 135 वर्ग मीटर। ब्लाक 13 टाईप-ए एच आईजी भूखण्ड क्रं. 2 से 6 एवं 9 आकार 270 वर्ग मीटर। ब्लाक 14 टाईप-ए एच आईजी भूखण्ड क्रं. 3, 4 एवं 12 आकार 270 वर्ग मीटर का शामिल है।

निविदा प्रक्रिया में कोई भी व्यस्क भारतीय नागरिक भाग ले सकते है, निविदा में भाग लेने के लिए निविदाकार को सर्वप्रथम आनलाईन पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in में पंजीयन पूर्ण करना होगा तथा स्वयं का डिजिटल सिग्नेचर टोकन तैयार करना होगा। डिजिटल सिग्नेचर टोकन, किसी भी अधिकृत च्वाईस सेंटर से बनवाया जा सकता है। डिजिटल सिग्नेचर टोकन बनवाने पश्चात पोर्टल में पंजीयन से प्राप्त आई.डी. पासवर्ड एवं डिजिटल सिग्नेचर टोकन पिन के माध्यम से निविदा प्रक्रिया में भाग लिया जा सकता है। भूखण्ड हेतु निर्धारित धरोहर राशि आनलाईन पोर्टल पर जमा किया जाना है। निविदा/प्रस्थापन 30 वर्षीय स्थायी लीज पर प्राप्त अधिकतम प्रव्याजि के लिए आमंत्रित की जा रही है एवं प्राप्त अधिकतम प्रव्याजि राशि पर आवासीय प्रयोजन हेतु 0.30 प्रतिशत एवं व्यावसायिक प्रयोजन हेतु 0.60 प्रतिशत वार्षिक भू-भाटक देय होगा।

भारत अमेरिका ट्रेड डील के विरोध में दुर्ग में किसानों का प्रदर्शन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ प्रगतिशील किसान संगठन की बैठक नगपुरा के देवांगन भवन में हुई जिसमें भारत अमेरिका ट्रेड डील का कृषि, पशुपालन और किसानों पर पड़ने वाले संभावित प्रभाव पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया।

बैठक में निर्णय लिया गया है कि देश के किसान संगठनों के साथ एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए गुरुवार 12 फरवरी को 11.30 बजे दुर्ग में गांधी प्रतिमा के पास डील के विरोध में किसान प्रदर्शन करेंगे। बैठक में रमेश डिब्रीवार, गणेश देशमुख, गोपाल देशमुख, ओंकार साहू, श्रीराम साहू, दुश्वंत गीतम, धर्मेंद्र देशमुख, संतराम देशमुख, देवेंद्र साहू, देवशरण साहू, संतुलाल पटेल, पुनेश्वर साहू, बंशीलाल देवांगन, बद्री प्रसाद पारकर, परमानंद यादव, ढालेश साहू, उत्तम चंद्राकर, बाबूलाल साहू, आई के वर्मा, राजकुमार गुप्त आदि शामिल रहे।

खास खबर

उत्कल जागरण फाउंडेशन ने अभिषेक टंडन को बनाया दुर्ग जिलाध्यक्ष

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

उत्कल समाज में संगठनात्मक मजबूती और सदस्यता अभियान को गति देने के उद्देश्य से उत्कल जागरण फाउंडेशन द्वारा दुर्ग जिले में नई नियुक्ति की गई है। फाउंडेशन के प्रदेश अध्यक्ष श्री विशाल मोहंती ने दुर्ग जिलाध्यक्ष पद के लिए अभिषेक टंडन की नियुक्ति की है।

यह नियुक्ति समाज के सभी वर्गों को संगठित कर एक मंच पर लाने तथा समाज उत्थान के कार्यों को प्रभावी रूप से आगे बढ़ाने के उद्देश्य से की गई है। संगठन को विश्वास है कि टंडन अपने दायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वहन करते हुए सदस्यता अभियान को विस्तार देंगे और समाज को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उत्कल जागरण फाउंडेशन के पदाधिकारियों और समाजजनों ने अभिषेक टंडन को नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं और उनके सफल कार्यकाल की कामना की।

छत्तीसगढ़ क्रीड़ा प्रोत्साहन योजना : खेलवृत्ति के लिए आवेदन आमंत्रित

दुर्ग। छत्तीसगढ़ शासन खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा क्रीड़ा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-26 के लिए प्रतिभावान खिलाड़ियों से खेलवृत्ति हेतु आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। यह खेलवृत्ति विगत वर्ष 2024-25 में खिलाड़ियों द्वारा अर्जित खेल उपलब्धियों के आधार पर प्रदान की जाएगी। योजना के तहत 25 वर्ष तक की आयु के ऐसे खिलाड़ी पात्र होंगे, जिन्होंने ओलंपिक, कॉमनवेल्थ, एशियाड एवं नेशनल गेम्स में शामिल खेलों की राष्ट्रीय/राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में सीनियर, जूनियर या सब-जूनियर वर्ग में प्रथम, द्वितीय या तृतीय स्थान प्राप्त किया हो। एकल व दलीय खेलों में वास्तविक रूप से उक्त प्रतियोगिता में खेले हुए खिलाड़ी पात्र होंगे जिसका प्रमाण संबंधित खेल संघ पदाधिकारियों के माध्यम से प्रस्तुत करना होगा। आवेदन पत्र राज्य खेल संघ से प्रमाणिकरण सहित जिला कार्यालय/संचालनालय में जमा करना होगा। आवेदन की अंतिम तिथि 16 फरवरी 2026 (कार्यालयीन समय तक) निर्धारित की गई है। आवेदन प्रारूप विभागीय वेबसाइट sportsyw.cg.gov.in पर उपलब्ध है।

आंगनबाड़ी सहायिका पद हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

दुर्ग। एकीकृत बाल विकास परियोजना दुर्ग-ग्रामीण दुर्ग के अंतर्गत आंगनबाड़ी केन्द्र ननकी-04 के एक रिक्त सहायिका पद हेतु आवेदन आमंत्रित किया गया था, जिसमें संशोधन करते हुए पात्र इच्छुक आवेदिका से 2026 से 12 फरवरी 2026 तक ई-भर्ती पोर्टल//www.e-bhuti.in के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किया गया है।

भाजपा की शिक्षा विरोधी नीति के खिलाफ युवा नेता गुल्लक लेकर सड़कों पर उतरे, संभागीय कार्यालय का किया घेराव

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा बोर्ड परीक्षा एवं आवेदन शुल्क में की गई भारी बढ़ोतरी के विरोध में बुधवार को राजनांदगांव में कांग्रेस के युवा नेताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। पूर्व पार्षद एवं पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष ऋषि शास्त्री तथा प्रदेश अल्पसंख्यक विभाग सचिव विशु अजमानी के संयुक्त नेतृत्व में आयोजित इस विरोध प्रदर्शन में बड़ी संख्या में युवा कार्यकर्ता शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने हाथों में गुल्लक लेकर सड़कों पर उतरते हुए आम नागरिकों से प्रतीकात्मक सहयोग मांगा और संभागीय कार्यालय का घेराव किया। इस दौरान भाजपा सरकार की शिक्षा विरोधी नीतियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई।

कांग्रेस युवाओं का कहना था कि भाजपा सरकार लगातार शिक्षा को महंगा बनाकर गरीब, मध्यम वर्ग एवं वंचित तबके के विद्यार्थियों को मुख्यधारा से बाहर करने का प्रयास कर रही है। प्रदर्शनकारियों के संभागीय कार्यालय पहुंचने से पहले ही आंदोलन की सूचना मिलने पर अधिकारियों ने कार्यालय में ताला जड़ दिया और कोई भी जिम्मेदार अधिकारी मौके पर उपस्थित नहीं रहा। इससे नाराज कांग्रेस युवाओं ने कार्यालय के बाहर ही गुल्लक रखकर विरोध दर्ज कराया और प्रशासन की इस कायर्शैली को

गैर-जिम्मेदाराना, असंवेदनशील और लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत बताया।

पूर्व पार्षद एवं पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष ऋषि शास्त्री ने कहा कि भाजपा सरकार ने बोर्ड परीक्षा शुल्क दोगुना तथा आवेदन शुल्क तिगुना कर विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों पर सीधा आर्थिक बोझ डाल दिया है। उन्होंने कहा कि आज हालात ऐसे बना दिए गए हैं कि बच्चों की पढ़ाई के लिए घरों की गुल्लक तोड़कर सरकार की तिजोरी भरनी पड़ रही है। यह फैसला शिक्षा को अधिकार से हटाकर व्यापार बनाने वाला है और इसका सबसे ज्यादा असर ग्रामीण क्षेत्रों, गरीब परिवारों तथा मध्यम वर्ग के छात्रों पर पड़ेगा।कांग्रेस शासनकाल की नीतियों का उल्लेख करते हुए कहा कि उस दौरान आत्मानंद शासकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की स्थापना कर गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई गई। साथ ही बेरोजगार युवाओं सहित सभी वर्गों के अभ्यर्थियों के लिए प्रतियोगी परीक्षाएं निःशुल्क कर शिक्षा को आमजन के लिए सुलभ बनाया गया था। उन्होंने आरोप लगाया कि वतर्मान सरकार उन उपलब्धियों को समाप्त कर शिक्षा व्यवस्था को कमजोर करने पर तुली हुई है।

प्रदेश अल्पसंख्यक विभाग सचिव विशु अजमानी ने कहा कि भाजपा सरकार की नीतियां पूरी तरह शिक्षा विरोधी हैं। सरकार शिक्षा को मुनाफे का साधन बना रही है और शासकीय स्कूलों की अनदेखी कर निजीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि बोर्ड परीक्षा एवं आवेदन शुल्क वृद्धि का फैसला तत्काल वापस नहीं लिया गया तो कांग्रेस युवा संगठन चरणबद्ध आंदोलन करेगा और यह लड़ाई सड़कों से लेकर सदन तक लड़ी जाएगी।

इस दौरान सागर ताम्रकार, संजय साहू, गरुण विक्रम, जय जायसवाल, हर्षिल हानी भलावे, शुभम कसार, दीनू साहू, अभी गुप्ता, अंसल श्रीवास्तव, सोमिल जैन, रौशन परिहार, कारण साहू, आर्यन वर्मा, धर्मेंद्र वासनिक, अनुभव पटने, यस, ऋषि गरडे, कान्हा गजभीये, सुधीर दिवाकर सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस युवा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सेल वालीबॉल चयन स्पर्धा 24 से

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

दुर्गापुर इस्पात संयंत्र द्वारा 24 से 27 फरवरी 2026 तक दुर्गापुर में सेल वालीबॉल प्रतियोगिता 2025-26 का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में सेल कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली से संबद्ध विभिन्न इस्पात संयंत्रों की टीमें भाग लेंगी। भिलाई इस्पात संयंत्र की वालीबॉल टीम भी प्रतियोगिता में सहभागिता करेगी।

भिलाई इस्पात संयंत्र की टीम के गठन हेतु क्रीडा, सांस्कृतिक एवं नागरिक सुविधाएं विभाग द्वारा दिनांक 12 फरवरी 2026 को सायं 4:00 बजे वालीबॉल कॉम्प्लेक्स, पंत स्टेडियम, सेक्टरझ्र1, भिलाई में चयन स्पर्धा आयोजित की जाएगी।

भिलाई इस्पात संयंत्र के

इच्छुक पुरुष कमर्चारी, जो चयन स्पर्धा में भाग लेना चाहते हैं, वे 12 फरवरी 2026 को सायं 4:00 बजे तक वालीबॉल कॉम्प्लेक्स, पंत स्टेडियम, सेक्टरझ्र1, भिलाई में उपस्थित होकर निम्नलिखित चयनकर्ताओं के पास अपना नाम दर्ज करा सकते हैं— दीपक मित्रा (9407986416), विनोद नायर (9406206767) निजाम उद्दीन (9179580769), बी एस. श्रीनिवास राव (9407977675) तथा शशेख महमू (9407985739)। उप प्रबंधक (क्रीडा, सांस्कृतिक एवं नागरिक सुविधाएं) अभिजीत भौमिक इस चयन स्पर्धा के प्रभारी होंगे।

संगठन सृजन अभियान : नई दिल्ली में जिलाध्यक्षों का हुआ प्रशिक्षण

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा इंदिरा भवन, नई दिल्ली में आयोजित संगठन सृजन अभियान के अंतर्गत देशभर के जिला कांग्रेस अध्यक्षों का महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में जिला कांग्रेस कमेटी दुर्ग (ग्रामीण) के जिलाध्यक्ष राकेश ठाकुर, दुर्ग शहर अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल, भिलाई शहर अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर सहित प्रदेश भर के जिलाध्यक्षों ने सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संगठन को जमीनी स्तर पर अधिक सशक्त, सक्रिय एवं जनोन्मुखी बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, राष्ट्रीय महासचिव के.सी. वेणुगोपाल एवं राष्ट्रीय महासचिव

एवं पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने उपस्थित जिलाध्यक्षों को संगठन विस्तार, बूथ स्तर तक मजबूती, जनसंपर्क अभियान और आगामी राजनीतिक चुनौतियों को लेकर विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान किए।

राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने अपने संबोधन में कहा कि कांग्रेस पार्टी की वास्तविक शक्ति उसके जमीनी कार्यकर्ता हैं। संगठन को मजबूती देने के लिए पारदर्शिता, सक्रियता और जनहित के मुद्दों पर संघर्ष की आवश्यकता है।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सामाजिक न्याय, युवाओं की भागीदारी, महिला सशक्तिकरण और किसानों-मजदूरों के अधिकारों की लड़ाई को संगठन का मूल आधार बताते हुए जिलाध्यक्षों से जनता के बीच निरंतर संवाद बनाए रखने का निर्देश दिया है।

राष्ट्रीय महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने, डेटा आधारित कार्यप्रणाली अपनाने और प्रत्येक बूथ पर सक्रिय टीम तैयार करने पर विशेष जोर दिया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ के जिलाध्यक्षों का परिचय लोकसभा सांसद श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा से करवाया। श्रीमती प्रियंका गांधी ने छत्तीसगढ़ के संगठनात्मक कार्यो की सराहना करते हुए आगामी चुनावी चुनौतियों के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने का संदेश दिया।

जिला कांग्रेस कमेटी दुर्ग (ग्रामीण) के अध्यक्ष राकेश ठाकुर ने कहा कि संगठन सृजन अभियान से प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर दुर्ग (ग्रामीण) जिले में बूथ स्तर तक संगठन को और अधिक सशक्त किया जाएगा। प्रत्येक कार्यकर्ता को सक्रिय भूमिका दी जाएगी तथा जनता की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया जाएगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राष्ट्रीय नेतृत्व के मार्गदर्शन में कांग्रेस पार्टी आने वाले समय में और अधिक मजबूत होकर जनता की आवाज बुलंद करेगी।

15 को बीएसपी अनाधिशासी कर्मचारी संघ की होगी आमसभा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

बीएसपी अनाधिशासी कर्मचारी संघ (इअङर), भिलाई की वार्षिक आमसभा का आयोजन 15 फरवरी को किया जा रहा है। सभा के दौरान वर्ष 2024-25 की वार्षिक गतिविधियों एवं आर्थिक लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही, आगामी वर्ष की योजनाओं तथा यूनियन द्वारा किए गए प्रमुख कार्यो पर चर्चा की जाएगी। इसके अतिरिक्त, ट्रेड यूनियन में सुधार हेतु उपस्थित सदस्यों के बहुमूल्य सुझाव भी आमंत्रित किए जाएंगे।

विशेष कार्यक्रमः कार्यक्रम में नवनिर्वाचित पदाधिकारियों एवं वर्किंग कमेटी सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह भी संपन्न होगा।

इस अवसर पर बीएकेएस के बैनर तले बालाजी ब्लड बैंक, सुपेला के सहयोग से स्वैच्छिक

रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया जाएगा।

15 फरवरी 2026 (रविवार) समय : प्रातः 11:00 बजे से सायं 4:00 बजे तक इंजीनियर्स भवन, एमपी हॉल, इंदिरा प्लेस, सिविक सेंटर, भिलाई : दोपहर 1:00 बजे से कार्यक्रम में नवनियुक्त सभी पदाधिकारी मौजुद रहेंगे। अध्यक्ष अमर सिंह, कायर्कारी अध्यक्ष रणधीर कुमार, उपाध्यक्ष, अभिषेक सिह, महासचिव किशोर कुमार साव, उपमहासचिव नवीन ध्रुव सचिव अजय रत्न, कोषाध्यक्ष नवीन कुमार मिश्रा, उप कोषाध्यक्ष टिकेंद्र पटेल सहित पुरी कायर्कारिणी मौजुद रहेगी। इस आम सभा में बीएकेएस बोकारो के अध्यक्ष हरिओम, महासचिव दिलीप कुमार, आरएकेएस राउरकेला के अध्यक्ष सुधीर कुमार श्रीवास्तव, महासचिव अभिजित प्रजापती भी विशेष रुप से शामिल होंगे। सभा के चर्चा का विषय बीएसपी कमर्चारियों की समस्याएँ, मुद्दे, बीएसपी तथा सेल प्रबंधन का अड़ियल रवैया, इस्पात मंत्रालय का रवैया भी रहेगा। सभी यूनियनो द्वारा लड़े जा रहे मुकदमे की प्रगति का विवरण भी सभा में दिया जायेगा।

निर्वाचित प्रतिनिधि कर रहे संचालन

बीएकेएस सिर्फ कर्मचारियों द्वारा गठित यूनियन है, जो लोकतांत्रिक तरिके से निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा संचालित हो रही है। कुछ समय में ही हमारी टीम ने बीएसपी/सेल प्रबंधन तथा सरकार को कलम की ताकत का एहसास करा दिया है। आम सभा में सभी बीएसपी कर्मचारियों से शामिल होने की अपील की जा रही है।

किशोर कुमार साव
महासचिव, बीएकेएस भिलाई

मेहनतकश मजदूर 40वर्षो से अपनी समस्याओं को लेकर कर रहे संघर्ष

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा मजदूर कार्यकर्ता समिती प्रगतिशील सीमेंट श्रमिक संघ और मेहनतकश आवास अधिकार संघ ने संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताए की राज्य में विगत 40 वर्षो से मजदूरों, किसानों एवं आम जनता की समस्याओं के समाधान हेतु लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक तरीके से संघर्ष करते आ रहे हैं। परंतु विगत कुछ वर्षो से परिस्थितियाँ अत्यंत चिंताजनक हो गई हैं। मेहनतकश जनता अपने अस्तित्व की रक्षा तथा जीवन-यापन के लिए निरंतर संघर्ष करने को विवश है।

वतर्मान हालात ऐसे प्रतीत होते हैं मानो श्रमिक वर्ग पुनः शोषण और आर्थिक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा जा रहा हो। यह स्थिति हमारे संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक एवं लोकतांत्रिक अधिकारों की भावना के प्रतिकूल है।

मजदूर विरोधी चारों श्रम संहिताओं (लेबर कोड) को निरस्त किया जाए। समाप्त किए गए 44 श्रम कानूनों को श्रमिक हित में संशोधित कर पुनः लागू किया जाए। आशा, मिड-डे मील, आंगनवाड़ी, ठेका, अनुबंध, आउटसोर्स एवं रसोइया सहित सभी अस्थायी कमर्चारियों को स्थायी किया जाए। निर्माण श्रमिकों सहित सभी मजदूरों के लिए न्यूनतम मासिक वेतन 30,000 घोषित किया जाए। सरकारी विभागों में रिक्त पदों पर स्थायी भर्ती की जाए तथा बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराया जाए। वर्ष 2023 के चुनावी घोषणा पत्र में किए गए 57,000 शिक्षकों की भर्ती के वादे को पूर्ण किया जाए। ड्राफ्ट बिजली बिल संशोधन 2025 को वापस लिया जाए। सार्वजनिक उपक्रमों एवं संस्थानों का निजीकरण बंद किया जाए। संबंधित श्रम-विरोधी कानूनों को निरस्त कर मनरेगा मजदूरों को वर्ष में 200 दिन कार्य एवं 800 दैनिक मजदूरी की गारंटी दी जाए। शहर सौंदर्यीकरण के नाम पर गरीब बस्तियों को उजाड़ना बंद किया जाए तथा हॉस्पिटल सेक्टर, अंसुईया नगर, बिजली नगर, खम्हरिया भाठा आदि क्षेत्रों में पट्टा सहित आवास उपलब्ध कराया जाए।

आस्था का पर्व | इस बार का आयोजन ऐतिहासिक

महाशिवरात्री पर भिलाई में बाबा की बारात का भव्य आयोजन, एशिया व इंडिया के रिकार्ड बुक में दर्ज होगा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

15 फरवरी को महाशिवरात्रि का पावन अवसर है। इस मौके पर बोलबम सेवा एवं कल्याण समिति द्वारा हर साल की तरह इस साल भी बाबा भोलेनाथ की भव्य बारात निकाली जाएगी। यह आयोजन पिछले 17 वर्षों से लगातार किया जा रहा है। इस वर्ष इसका 18वां संस्करण होगा।

बोलबम सेवा एवं कल्याण समिति के प्रदेश अध्यक्ष दया सिंह ने मंगलवार को आयोजित प्रेसवार्ता में बाबा की बारात की तैयारियों की डिटेल जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस बार का आयोजन ऐतिहासिक होने जा रहा है। दया सिंह ने बताया कि इस वर्ष बाबा की बारात को एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया जाएगा। आयोजन की भव्यता और विशाल स्वरूप को देखते हुए यह उपलब्धि तय मानी जा रही है।

बता दें कि, प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि बाबा की बारात की भव्यता ऐसी होती है कि इसे देखने के लिए देश-प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से श्रद्धालु पहुंचते हैं। इस वर्ष श्रद्धालुओं की

संख्या और भी अधिक रहने की संभावना है। बारात को सफल बनाने के लिए बोलबम सेवा एवं कल्याण समिति के पदाधिकारी, युवा विंग, महिला विंग और सदस्यगण पिछले दो महीनों से लगातार तैयारियों में जुटे हुए हैं।

इस आयोजन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र

मोदी, राज्यपाल रामेन डेका, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, पूर्व मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, केंद्रीय मंत्री, पूर्व कैबिनेट मंत्री, समाज प्रमुख और साधु-संतों को आमंत्रण पत्र भेजा गया है। अधिकांश अतिथियों ने कार्यक्रम में शामिल होने की सहमति दी है। केरल प्रदेश से 40 कलाकारों की टीम द्वारा 7 भव्य झांकियां लाई जा रही हैं। इनमें भगवान शिव का तांडव नृत्य, मां काली का भव्य नृत्य, गरुड़ नृत्य, मोर नृत्य, भगवान गणेश की नृत्य झांकी, हनुमान जी की विशाल झांकी सहित अन्य देवी-देवताओं के स्वरूप शामिल होंगे।

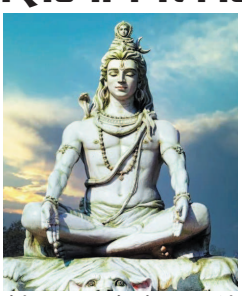

आंध्रप्रदेश के हैदराबाद, विजयवाड़ा, राजमंडरी और विशाखापट्टनम से आने वाली झांकियों में महाकाली झांकी विशेष आकर्षण का केंद्र रहेगी। इस बार मां दुर्गा के नौ रूपों की 15 फीट ऊंची झांकी, शिव-पावर्ती, अघोरा, भूत-पिशाच और अवघण नृत्य की भव्य प्रस्तुति देखने को मिलेगी।

हरियाणा प्रदेश से बाबा (राम) आर्ट ग्रुप द्वारा शिवलिंग दर्शन, भगवान भोलेनाथ की भस्म आरती और राधा-कृष्ण की वृज होली की झांकियां प्रस्तुत की जाएंगी। नई दिल्ली और हरियाणा की काली ग्रुप द्वारा 15 फीट ऊंची कंकाल खोपड़ी से निकलते शिव-पावर्ती की वरमाला झांकी विशेष आकर्षण होगी। बता दें कि, दया सिंह ने कहा कि इस बार का आयोजन पिछले वर्षों से बिल्कुल अलग और अधिक भव्य होगा। अवघणों की टीम के साथ भगवान भोले शंकर के शिव तांडव और आनंद नृत्य की प्रस्तुति श्रद्धालुओं को अलौकिक अनुभूति कराएगी।

संपादकीय

सरकार बात माने तो परेशानी न माने तो परेशानी

हर पार्टी में ननकीराम कंवर जैसे वरिष्ठ नेता होते हैं और अपनी ही पार्टी के लिए आए दिन परेशानी पैदा करते रहते हैं। वह जो कुछ कहते और करते हैं, उससे तो सबको ऐसा लगता है कि वह व्यावहारिक प्रभाव पर केन्द्रित होता जा रहा है। चर्चा एआई की सैद्धांतिक क्षमता से हटकर व्यवहार में उसके द्वारा हल की जा सकने वाली समस्याओं पर टिकती जा रही है। खाद्य और कृषि जैसे कुछ ही क्षेत्र इस अंतर को इतनी स्पष्टता से दर्शा पा रहे हैं। ये वो क्षेत्र हैं जहां अक्षमताएं मामूली नहीं बल्कि प्रणालीगत हैं और प्रौद्योगिकी को जहां जलवायु, लॉजिस्टिक्स एवं बाजार से जुड़ी गहरी स्थानीय वास्तविकताओं के दायरे में काम करना चाहिए।

खाद्य प्रणालियां इस समस्या को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। भारत अपनी आबादी को खिलाने के लिए पर्याप्त से अधिक उत्पादन करता है, फिर भी अनुमानित 68 मिलियन टन भोजन हर साल बर्बाद हो जाता है। इसमें अनियमित आपूर्ति, खराब गुणवत्ता मूल्यांकन और खंडित आपूर्ति श्रृंखलाओं के कारण कटाई के बाद 35–40 प्रतिशत फल एवं सब्जियां नष्ट हो जाती हैं। संकट उत्पादन का नहीं, बल्कि रोके जा सकने वाले नुकसान का है। यह नुकसान किल्लत का नहीं, बल्कि पैदावार एवं उपभोग और आंकड़ों एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया के बीच के असंतुलन का नतीजा है। सालों से, गुणवत्ता और समय से जुड़ी विश्वसनीय एवं वास्तविक जानकारियों का अभाव भारतीय किसानों तथा नियामकों के लिए एक चुनौती बना हुआ है। जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप डिजाइन किया जाता है, तो यह इस खाई को पाटने का एक रास्ता खोलती है।

जैविक वास्तविकता और आर्थिक निर्णय लेने की प्रक्रिया के बीच की यह खाई ही वह क्षेत्र है जहां व्यावहारिक एआई का खासा कारगर हो सकता है। क्यूजेंस लैब्स में, हमारा काम एक साधारण अवलोकन से शुरू हुआ: अब जबकि भारत के डिजिटल बुनियादी ढांचे ने भुगतान, पहचान और सेवाओं की आपूर्ति को पूरी तरह बदल दिया है, गुणवत्ता का आकलन करने के तरीके के मामले में खाद्य अर्थव्यवस्था काफी हद तक एनालॉग ही बनी हुई है। 'क्यूस्कैनइ नाम की जो एआई-संचालित संवेदन प्रणाली हमने विकसित की है, वह फलों और सब्जियों में आंतरिक गुणवत्ता संबंधी संकेतों को पकड़ ? हेतु अवरक्त (इंफ्रारेड) स्पेक्ट्रोस्कोपी तथा कृत्रिम सूंघने की क्षमता (आर्टिफीशियल ओल्फैक्शन) का उपयोग करती है और उन्हें निर्णय लेने के समय उपयोगी जानकारियों में परिवर्तित करती है। इरादा स्वचालन को सिर्फ दिखावे की मंशा से लागू करना भर नहीं, बल्कि कम लाभ पर काम करने वाले उपभोक्ताओं, किसानों और खुदरा विक्रेताओं के लिए अनिश्चितताओं को कम करना था।

इस अनुभव से यह बात स्पष्ट हो गई है कि एआई की प्रभावशीलता मूल रूप से संदर्भ पर निर्भर करती है। विदेशी आंकड़े (डेटासेट) या मानकीकृत आपूर्ति श्रृंखलाओं पर प्रशिक्षित मॉडल भारत की उन विविधता भरी परिस्थितियों में विफल हो जाते हैं, जहां फसलों की किस्में, जलवायु, भंडारण की पद्धतियां और बाजार की संरचनाएं विभिन्न क्षेत्रों में बिल्कुल ही अलग-अलग होती हैं। खासकर खाद्य प्रणालियों में, सटीकता को स्थानीयता से अलग नहीं किया जा सकता। भारतीय उपज, भारतीय लॉजिस्टिक्स और भारतीय व्यवहारिक मानदंडों को न समझने वाली एआई के लिए न्यूनतम रूप से अप्रासंगिक और अधिकतम रूप से भ्रामक होने का जोखिम होता है।

इसीलिए संप्रभु एवं घरेलू जड़ों में निहित एआई पर वर्तमान नीतिगत जोर सामयिक और जरूरी, दोनों है। 'इंडियाएआई मिशनइ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति राज्य के दृष्टिकोण में एक स्पष्ट बदलाव का संकेत देता है – इसे रोजमर्रा की वास्तविकताओं से कटे एक अत्याधुनिक तकनीक के रूप में नहीं, बल्कि विकासात्मक बुनियादी ढांचे के रूप में देखा जा रहा है। स्वदेशी एआई अनुप्रयोगों के लिए लक्षित वित्तपोषण, राष्ट्रीय कंप्यूटिंग क्षमता में निवेश, भारतीय डेटासेट के लिए समर्थन और क्षेत्र-विशिष्ट समाधानों को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों के जरिए, यह मिशन सक्रिय रूप से एक ऐसे इकोसिस्टम का निर्माण कर रहा है जहां नवाचार स्थानीय जरूरतों पर आधारित है। स्वदेशी मॉडलों, स्टार्टअप और जनहित की परियोजनाओं का समर्थन करके, यह मिशन अन्य भौगोलिक क्षेत्रों से लिए गए एआई प्रणालियों के बजाय भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप डिजाइन की गई एआई प्रणालियों के लिए जगह बना रहा है।

खाद्य और कृषि के उदाहरणों से साफ होता है कि यह क्यों महत्वपूर्ण है। फसल की कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने से किसानों की आय, खाद्य पदार्थों की कीमतों और पर्यावरण से जुड़े नतीजों पर सीधा असर पड़ता है। बचाई गई उपज की प्रत्येक इकाई भूमि, जल और ऊर्जा संसाधनों पर दबाव को कम करती है, जोकि जलवायु परिवर्तन और जिम्मेदार उपभोग के प्रति भारत की प्रतिबद्धताओं के अनुरूप है। अक्सर व्यवहार में बदलाव या न इनपुट की जरूरत वाले उपज बढ़ाने के उपायों के उलट, बेहतर गुणवत्ता मूल्यांकन समन्वय में सुधार करके बेहतर नतीजों को संभव बनाता है – जिससे प्रणाली सही समय पर कार्य करने में सक्षम होती है।

समावेशन का प्रश्न भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सार्वजनिक हित में एआई का सदुपयोग तभी संभव है जब यह सिर्फ बड़े उद्यमों के बजाय छोटे व्यवसायों के लिए भी सुलभ हो। भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में इसका आशय ऐसे उपकरणों से है जो अनौपचारिक बाजारों में काम करें, स्थानीय भाषाओं का समर्थन करें और मानवीय निर्णय को दरकिनार करने के बजाय उसका पूरक बनें। अस्पष्ट सुझाव थोपने वाली प्रौद्योगिकियां विश्वास अर्जित करने के लिए जूझेंगी। अदृश्य जानकारी को दृश्यमान बनाकर निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुगम बनाने वाली प्रौद्योगिकियों के स्वाभाविक रूप से व्यापक होने की संभावनाएं कहीं अधिक हैं।

हमारे देश की राजधानी में 16 से 20 फरवरी 2026 के दौरान आयोजित होने वाला 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिटइ ऐसे समय में हो रहा है जब ये अंतर और भी स्पष्ट होते जा रहे हैं। वैश्विक स्तर पर, एआई से जुड़ी चर्चाएं शक्तियों के केन्द्रीकरण, डेटा संबंधी विषमताओं और पर्यावरण से जुड़ी कीमतों जैसे मुद्दों से जूझ रही हैं। भारत के लिए मौका एक अलग राह दिखाने में निहित है, एक एक ऐसी राह जहां बुद्धिमत्ता विकेन्द्रीकृत, संदर्भों के प्रति जागरूक और वास्तविक आर्थिक प्रणालियों में समाहित हो। कृषि, खाद्य संबंधी लॉजिस्टिक्स और जलवायु अनुकूलन एआई से जुड़ी कहानी में हाशिए पर नहीं, बल्कि इसके केन्द्र में हैं।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि एआई अपने आप ही प्रभाव उत्पन्न नहीं करता। इसके लिए विषय-वस्तु की गहरी समझ, जटिल नीतिगत वास्तविकताओं के प्रति धैर्य और सार्वजनिक संस्थानों के साथ घनिष्ठ समन्वय की जरूरत होती है। हालांकि, जब ये शर्तें पूरी की जाती हैं, तो एआई उन क्षेत्रों को चुपचाप बदल सकता है जिन्होंने लंबे समय से सुधार का विरोध किया है। यह बदलाव व्यवधान के जरिए नहीं, बल्कि पूर्व में लिए गए बेहतर निर्णयों के जरिए होता है।

इम्पैक्ट समिट जैसे–जैसे करीब आता जा रहा है, नीति निर्माताओं, प्रौद्योगिकीविदों और उद्यमियों के सामने एआई को अंधाधुंध रूप से अपनाने के बजाय सोच-समझकर और गहराई से लागू करने की चुनौती है। सफलता को मॉडल के मानकों के बजाय अपव्यय को कम करने, आय को स्थिर करने और सुरक्षित को मजबूत करने में बुद्धिमत्ता की कामयाबी के आधार पर मापा जाना चाहिए। भारत के विकास के कई अन्य क्षेत्रों की तरह, खाद्य प्रणालियों में एआई का सबसे बड़ा योगदान शायद समय रहते कार्रवाई करने में हमारी मदद करना ही है।

कृषि उपज के लिए बाजार को खोलना यानी बवंडर को निमंत्रण

उमेश चतुर्वेदी

इसमें दो राय नहीं है कि संयुक्त राज्य अमेरिका बरसों से भारतीय कृषि बाजार में बड़ी और व्यापक पहुंच हासिल करने की कोशिश में है। हाल ही में अमेरिका के साथ भारत ने महत्वपूर्ण व्यापार समझौता किया है। इसके तहत अमेरिकी बाजारों में भारतीय सामान 18 प्रतिशत के ही टैरिफ पर उपलब्ध हो सकेंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रंप की ओर से भारतीय सामानों पर मनमाने तरीके से थोपे गए पचास प्रतिशत के टैरिफ के मुकाबले मौजूदा व्यापार समझौते के तहत अमेरिका की ओर से प्रस्तावित 18 प्रतिशत का टैरिफ कम ही कहा जाएगा। हालांकि अतीत के करीब तीन प्रतिशत के मुकाबले फिर भी यह बहुत ज्यादा है। बहरहाल इसी समझौते के मद्देनजर जिस तरह से अमेरिकी कृषि मंत्री ब्रूक लेस्ली रोलिंग्स ने खुशी जताई, उससे भारतीय किसान आशंकित हो उठे।

भारतीय किसानों के आशंकित होने की वजह रोलिंग्स का बयान ही नहीं, अमेरिकी कृषि विभाग की कोशिशें भी हैं। रोलिंग्स ने व्यापार समझौते पर तीन फरवरी को एक्स पर खुशी जताते हुए लिखा कि यह समझौता अमेरिकी कृषि उत्पादों को भारत के विशाल बाजार में अधिक निर्यात करने में मदद करेगा, जिससे अमेरिकी कृषि उत्पादों की कीमतें बढ़ेंगी। इससे ग्रामीण अमेरिका में नकदी आएगी। रोलिंग्स यहीं पर नहीं रूके। उन्होंने सिर्फ 2024 के आंकड़ों का हवाला देते हुए लिखा कि भारत के साथ कृषि कारोबार के चलते अमेरिका को 1.3 अरब डॉलर का घाटा हो रहा है। रोलिंग्स ने उम्मीद जताई कि नए व्यापार समझौते की वजह से विशाल आबादी वाला भारत अमेरिकी कृषि उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण बाजार हो सकता है।

रोलिंग्स की इस खुशी की वजह से भारतीय किसानों का आशंकित होना जायज है। अमेरिका का कृषि व्यापार घाटा पचास अरब डॉलर है, इसलिए वह लगातार कोशिश करता रहा है कि भारत अपने कृषि बाजारों को खोले। भारत की चिंता की वजह उसकी खेती-किसानी वाली बड़ी जनसंख्या है। भारत के छियासी प्रतिशत किसान सीमांत या लघु हैं। जिनकी जोत दो हेक्टेयर से कम है। भारत में खेती पर करीब 10.7 करोड़ परिवार निर्भर हैं। यह जनसंख्या का करीब बासठ प्रतिशत है। अगर अमेरिकी कृषि उत्पादों को भारतीय बाजारों में घुसने की अनुमति मिलती है तो भारी सब्सिडी के चलते भारतीय बाजार अमेरिकी कृषि उत्पादों से भर जाएंगे। इससे भारतीय उत्पादों की मांग घट सकती है। इससे भारतीय किसानों के सामने संकट उठ खड़ा हो सकता है।

किसानों की आशंकाओं को विपक्षी दलों ने अपने ऊंचे सुरों से और बढ़ाया ही है। लेकिन कृषि, किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह का कहना है कि भारत-अमेरिकी व्यापार समझौते में भारतीय कृषि और डेयरी क्षेत्र के हितों से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया गया है और किसानों के हित पूरी तरह सुरक्षित हैं। चौहान का यह भी कहना है कि इस कारोबारी समझौते से देश के मुख्य खाद्यान्नों, मिलेट्स, फलों,सब्जियों और डेयरी उत्पादों को पूरी तरह अलग रखा गया है। इस लिहाज से देखें तो इस कारोबार समझौते से देश के कृषि और डेयरी क्षेत्र पर किसी प्रकार का खतरा नहीं है। शिवराज सिंह चौहान के मुताबिक, इस समझौते से भारतीय किसानों को नए अवसर मिलेंगे,क्योंकि इस समझौते में कृषि क्षेत्र को नुकसान पहुंचाए, ऐसा कोई प्रावधान नहीं किया गया है। भारत अमेरिका समेत दुनिया के कई देशों को चावल का बड़ा निर्यातक है। हालिया आंकड़ों के अनुसार, भारत की ओर से अमेरिका समेत कई देशों को करीब 63 हजार करोड़ के चावल का निर्यात कर चुका है। भारत सरकार का दावा है कि नए टैरिफ समझौते से भारतीय किसानों के चावल और मसालों के साथ ही टेक्सटाइल का निर्यात बढ़ेगा।

भारत-अमेरिकी समझौते के तहत भारत को अमेरिका से पांच सौ अरब डॉलर का सामान पांच सालों में खरीदना है। वैसे समझौते पर जो संयुक्त वक्तव्य जारी हुआ है, उसके तहत भारतीय कृषि बाजार को भी खोलने की बात कही गई है। लेकिन सरकारी सूत्रों का कहना है कि इस समझौते से, भारतीय चावल, गेहूं, सोया और मक्का जैसे अनाजों को बाहर रखा गया है और साथ ही ट्रेड डील से चीनी और डेयरी प्रोडक्ट्स भी बाहर हैं। ऐसा करने की वजह यह है कि भारतीय किसान और डेयरी उद्योग को कारोबारी परेशानियां न झेलनीं पड़ें। वैसे भी भारत लंबे समय से कृषि और डेयरी उद्योग को ह्वारेड-लाइनइ यानी किनारे रखने वाला सेक्टर मानता रहा है। इसकी वजह है कि गांवों में इनसे जुड़े काफी रोजगार हैं। इस सेक्टर को खोलने को लेकर भारत की बातचीत यूरोप और ब्रिटेन से भी अटक चुकी है। ऐसे में अमेरिका के लिए इस बाजार को खोलना भारतीय किसानों के लिए नुकसानदायक तो होगा ही, राजनीतिक बवंडर की वजह भी बन सकता है। इस बवंडर का सामना करने की हिम्मत विरली राजनीतिक ताकतें ही कर सकती हैं। इस समझौते से भारतीय निर्यातकों, खासतौर पर एमएसएमई, किसानों और मछुआरों के लिए तीन लाख अरब अमेरिकी डॉलर का बड़ा बाजार खुलने की उम्मीद है। इसकी वजह से जो निर्यात बढ़ेगा, उससे महिलाओं और युवाओं के लिए लाखों नए रोजगार के अवसर सृजित होने की संभावना जताई जा रही है। भारत मक्का, गेहूं, चावल, सोया, मुर्गी पालन, दूध, पनीर, एथनॉल, तंबाकू, सब्जियां और मांस सहित संवेदनशील कृषि और दुग्ध उत्पादों को पूर्ण रूप से संरक्षित करेगा। दोनों देश अपने-अपने हित वाले क्षेत्रों में एक-दूसरे को तरजीही बाजार पहुंच प्रदान करने को लेकर प्रतिबद्ध हैं।

आंकड़ों के अनुसार, साल 2024 में भारत ने अमेरिका से 2.4 अरब डॉलर के कृषि उत्पाद आयात किए थे, जिनमें ज्यादातर ताजे फल, सूखे मेवे, बादाम, अखरोट मादक पेय, कच्चा कपास, वनस्पति तेल और प्रोसेस्ड सामान हैं। दूसरी तरफ भारत ने अमेरिका को 6.2 अरब डॉलर का कृषि निर्यात किया, जिनमें समुद्री उत्पाद, मसाले, डेयरी उत्पाद, चावल, जड़ी-बूटियों के आयुर्वेदिक उत्पाद प्रमुख रहे। यह भारत के कुल 53.2 अरब डॉलर सालाना के कृषि निर्यात का 11.74 प्रतिशत है। कृषि और डेयरी उत्पाद के कारोबार के इसी असुंलन की वजह से अमेरिका भारतीय बाजार में घुसने की लगातार कोशिश कर रहा है। लेकिन भारतीय सूत्र इससे साफ इनकार कर रहे हैं। भारत के सामने संकट यह है कि अगर उसने इस क्षेत्र को खोला तो छोटे और सीमांत किसानों के सामने जो चुनौतियां खड़ी होंगी, उनसे वह कैसे निबट पाएगा।

हड़ताल श्रमिक अधिकारों को कमजोर करती है

एसपी तिवारी

चार नयी श्रम संहिताओं का क्रियान्वयन, भारत की विशाल श्रम शक्ति, विशेष रूप से अनौपचारिक और असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले श्रमिकों के लिए जीवन यापन में आसानी में सुधार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इन सुधारों का उद्देश्य, बिना जटिल उद्योग वर्गीकरण की बाधाओं के, सभी श्रमिकों के लिए न्यूनतम मजदूरी की गारंटी देना है। प्रत्येक श्रमिक के लिए अनिवार्य पहचान पत्र की शुरुआत करते हुए, ये संहिताएं उन्हें सामाजिक सुरक्षा लाभों तक सीधी पहुंच की सुविधा के साथ सशक्त बनाने का प्रयास करती हैं। नियमित और अनिवार्य स्वास्थ्य जांच, श्रमिकों की भलाई में मदद करेंगी, जिससे वे स्वस्थ और अधिक उत्पादक जीवन व्यतीत कर सकेंगे। इसके अलावा, समयबद्ध शिकायत निवारण व्यवस्था, पीड़ित श्रमिकों द्वारा सामना किए जाने वाले मानसिक तनाव और अनिश्चितता को कम करने में सहायता करेगी। समग्र रूप से, ये उपाय भारतीय श्रमिकों के लिए गरिमा, सुरक्षा और समावेशी विकास पर केंद्रित एक प्रगतिशील रूपरेखा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हालाँकि, इन सकारात्मक प्रावधानों के बावजूद, राजनीतिक रूप से प्रेरित केंद्रीय श्रमिक संघों (ट्रेड यूनियन) का एक हिस्सा अक्सर हड़ताल के प्रतिकूल प्रभाव पर पूरी तरह विचार किए बिना, हड़ताल पर उतर आता है। ऐसी हड़तालों से विशेष रूप से असंगठित अर्थव्यवस्था के लगभग 38 करोड़ श्रमिकों के पारिश्रमिक को भारी नुकसान होता है, जो अपनी जीविका के लिए दैनिक आय पर निर्भर होते हैं। उनके मुद्दों को हल करने के बजाय, बार-बार होने वाली हड़तालें रचनात्मक और कठोर सामूहिक सौदेबाजी की प्रक्रिया को कमजोर करती हैं, जिससे श्रमिकों और नियोक्ताओं दोनों के लिए न्यायसंगत और संतुलित परिणाम हासिल करने की संभावना कम हो जाती है।

समय के साथ, बार-बार हड़ताल बुलाने का प्रयास न केवल अप्रभावी साबित हुआ है बल्कि इसके परिणाम प्रतिकूल भी रहे हैं। बार-बार होने वाली हड़तालों से श्रमिकों में व्यापक थकान दिखाई पड़ता है, जिससे बड़ी संख्या में श्रमिक ऐसे आह्वान को या तो नजर अंदाज करते हैं या उनमें शामिल नहीं होते हैं। कुछ मामलों में, श्रमिकों के एक छोटे हिस्से को उनकी इच्छा के विपरीत हड़तालों में हिस्सा लेने के लिए मजबूर किया जाता है, जिससे इन आंदोलनों की नैतिक वैधता व सामूहिक ताकत और कमजोर हो जाती है। अंततः, यह प्रवृत्ति श्रमिक कल्याण उपायों के समग्र प्रभाव को कम करती है और श्रमिकों के बीच एकजुटता को कमजोर करती है।

हड़तालों के व्यापक परिणाम केवल कार्यस्थल तक सीमित नहीं रहते। औद्योगिक उत्पादन प्रभावित होता है, दैनिक यात्रियों को गंभीर असुविधा का सामना करना पड़ता है, और सड़क किनारे के विक्रेताओं, घरेलू श्रमिकों और छोटे सेवा प्रदाताओं की आजीविका बाधित हो जाती है। इन श्रमिकों के लिए, केवल एक दिन की आय का नुकसान भी आजीविका संकट पैदा कर सकता है, उन्हें अपनी सीमित बचत को खत्म करने तथा गंभीर आर्थिक असुरक्षा में जाने के लिए मजबूर कर सकता है।

भारत जैसी उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में, श्रमिक संघों (ट्रेड यूनियन) को संवाद, आपसी-बातचीत और नियोक्ताओं तथा सरकार के साथ रचनात्मक सहयोग को प्राथमिकता देनी चाहिए। स्थायी सौदेबाजी और सहयोगात्मक समस्या समाधान पर आधारित एक मॉडल उत्पादन, रोजगार, और समग्र आर्थिक वृद्धि को बाधित किए बिना श्रमिकों की समस्याओं का समाधान कर सकता है। वर्तमान संदर्भ में, भारतीय केंद्रीय श्रमिक संघों को, जो धीरे-धीरे अपना प्रभाव खो रहे हैं, आत्मविश्लेषण करने और अन्यत्र अपनाई जाने वाली अधिक प्रभावी और दूरदर्शी तरीकों को अपनाने की आवश्यकता है।

भारतीय श्रमिक को एक समग्र दृष्टिकोण के साथ संगठित किया जाना चाहिए, जो जीवन यापन में आसानी, सामाजिक सुरक्षा और सकारात्मक सहभागिता पर जोर देता हो। विवादों का समाधान टकराव के बजाय संवाद के माध्यम से करना यह सुनिश्चित करेगा कि परिचालन प्रक्रिया बाधित न हो और राष्ट्रीय विकास की गति सुचारू रूप से जारी रहे। केवल ऐसे संतुलित और व्यावहारिक रणनीतियों के जरिये ही श्रमिकों के अधिकारों को वास्तविक रूप में मजबूत और दीर्घावधि में सुरक्षित किया जा सकता है।

परीक्षाएँ नहीं, सीखना है जीवन का लक्ष्य

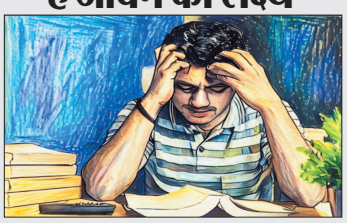

प्रभाकर उपाध्याय

आज के समय में परीक्षा को लेकर विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों के बीच अत्यधिक चिंता और तनाव का वातावरण देखने को मिला है। अक्सर अंकों को ही सफलता का एकमात्र मापदंड मान लिया जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि परीक्षाएँ जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं, बल्कि सीखने और स्वयं को बेहतर बनाने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण मात्र हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर भी परीक्षा पे चर्चा जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से यह संदेश दिया जा रहा है कि परीक्षा को बोझ नहीं, बल्कि एक अवसर के रूप में देखा जाए। विद्यार्थियों को यह समझने की आवश्यकता है कि परीक्षा उनके ज्ञान, समझ और आत्मविश्वास को परखने का माध्यम है, न कि उनकी संपूर्ण क्षमता का अंतिम निर्णय। आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में केवल अच्छे अंक ही सफलता की गारंटी नहीं हैं। समय की मांग है कि विद्यार्थियों का ध्यान अंकों के साथ-साथ कौशल विकास पर भी केंद्रित हो। संचार कौशल, समस्या समाधान क्षमता, रचनात्मक सोच, नेतृत्व क्षमता, टीमवर्क और तकनीकी दक्षता जैसे जीवन कौशल विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं। नई शिक्षा नीति और सीबीएसई भी अब इसी दिशा में कार्य करते हुए अनुभवात्मक शिक्षण, प्रोजेक्ट आधारित अधिगम और व्यावहारिक ज्ञान पर विशेष बल दे रहे हैं। अभिभावकों और शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को केवल अधिक अंक लाने के दबाव में न रखें, बल्कि उनकी रुचियों और क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में सीखने और आगे बढ़ ? के अवसर प्रदान करें। वास्तव में, अंक सफलता का एक हिस्सा हो सकते हैं, लेकिन कौशल ही जीवन में स्थायी सफलता का आधार बनते हैं। परीक्षा के समय विद्यार्थियों पर सबसे अधिक प्रभाव घर और विद्यालय के वातावरण का पड़ता है। अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों की तुलना अन्य विद्यार्थियों से न करें। तुलना से आत्मविश्वास कम होता है और तनाव बढ़ता है। इसके स्थान पर बच्चों को प्रोत्साहित करें, उनकी मेहनत की सराहना करें और सकारात्मक माहौल प्रदान करें।

विद्यालयों की भी यह जिम्मेदारी है कि वे केवल परीक्षा परिणाम पर ही ध्यान न दें, बल्कि बच्चों के समग्र विकास पर कार्य करें। खेल, योग, ध्यान और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों विद्यार्थियों के मानसिक संतुलन और एकाग्रता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आज के डिजिटल युग में विद्यार्थियों का काफी समय मोबाइल और सोशल मीडिया पर व्यतीत होता है, जो उनकी एकाग्रता और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। परीक्षा के समय विशेष रूप से डिजिटल उपकरणों का सीमित और उद्देश्यपूर्ण उपयोग आवश्यक है। संतुलित दिनचर्या — पर्याप्त नींद, पौष्टिक आहार, नियमित अध्ययन, छोटे-छोटे ब्रेक, योग और ध्यान — विद्यार्थियों को तनावमुक्त और ऊर्जावान बनाए रखने में सहायक होती है। नई शिक्षा नीति और सीबीएसई की मूल्यांकन प्रणाली भी अब केवल रटने की प्रवृत्ति से आगे बढ़कर समझ, विश्लेषण, रचनात्मकता और व्यवहारिक ज्ञान पर जोर दे रही है। इसलिए विद्यार्थियों को केवल अंक प्राप्त करने के बजाय विषय को समझने और जीवन में उसके उपयोग पर ध्यान देना चाहिए। जीवन में सफलता केवल परीक्षा के अंकों से तय नहीं होती। आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच, समय प्रबंधन, अनुशासन और निरंतर सीखने की आदत ही वास्तविक सफलता की कुंजी हैं। विद्यार्थियों की सफलता के लिए अभिभावक, शिक्षक और विद्यालय के बीच समन्वय अत्यंत आवश्यक है। यदि तीनों मिलकर बच्चों का मार्गदर्शन करें, उन्हें प्रेरित करें और उनका मनोबल बढ़ाएँ, तो कोई भी चुनौती कठिन नहीं रह जाती।

परीक्षा जीवन की यात्रा का एक पड़ाव है, मंजिल नहीं। इसे डर या दबाव के रूप में नहीं, बल्कि सीखने, आत्ममूल्यांकन करने और आगे बढ़ने के अवसर के रूप में स्वीकार करना चाहिए। हम सभी का प्रयास होना चाहिए कि बच्चों को ऐसा वातावरण मिले जहाँ वे बिना भय के सीख सकें, सोच सकें और अपने सपनों को साकार कर सकें। आइए, हम सब मिलकर यह संदेश फैलाएँ —परीक्षा बोझ नहीं, अवसर है; अंक नहीं, सीख ही असली सफलता है।

भारत देश को अपनी उपलब्धियों को बचाए रखने के लिए एआई के उपयोग की है जरूरत

सुश्री रुबल बिष

खास खबर

बदमाशों के खिलाफ कोरबा पुलिस की प्रभावी प्रतिबंधात्मक कार्यवाही

कोरबा। कोरबा जिले में कानून-व्यवस्था सुदृढ़ बनाए रखने, अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने एवं असामाजिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी के निर्देशन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं अनुविभागीय अधिकारी पुलिस के मार्गदर्शन में कोरबा पुलिस द्वारा जिले भर में प्रभावी प्रतिबंधात्मक कार्यवाही की गई। इस दौरान कोरबा पुलिस द्वारा रात्रि के समय सार्वजनिक स्थलों पर बेवजह घूमने, अड्डेबाजी करने एवं झुंड में एकत्रित होकर संदिग्ध गतिविधियों में संलिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध सख्त वैधानिक कार्यवाही की गई। कार्यवाही के अंतर्गत प्रतिबंधात्मक धारा 128 बीएनएसएस के तहत कुल 20 व्यक्तियों के विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही की गई।उक्त कार्यवाही का उद्देश्य रात्रिकालीन समय में शांति व्यवस्था बनाए रखना, असामाजिक एवं संदिग्ध तत्वों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करना तथा आम नागरिकों में सुरक्षा की भावना को सुदृढ़ करना है।कोरबा पुलिस द्वारा भविष्य में भी रात्रि गश्त, निगरानी एवं प्रतिबंधात्मक कार्यवाही इसी प्रकार निरंतर एवं सघन रूप से जारी रखी जाएगी।

शराब की अवैध तस्करी पर पुलिस का शिकंजा दो गिरफ्तार

कबीरधाम। जिला में अवैध शराब के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना कुण्डा पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि मोटरसाइकिल से भारी मात्रा में अवैध शराब लाकर बिक्री की तैयारी की जा रही है। 7 फरवरी 2026 को मिली सूचना के आधार पर पुलिस ने इलाके में नाकाबंदी कर दो संदिग्धों को रोका। तलाशी के दौरान उनके पास से प्लास्टिक बोरी में रखी देशी प्लेन शराब की 31 पौवा शीशियां बरामद हुईं। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान राकेश चंद्राकर (38 वर्ष) और जितेंद्र पारधी (28 वर्ष), दोनों निवासी शिकारी पारा, थाना कुण्डा के रूप में हुई है। दोनों के खिलाफ आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) और 59(क) के तहत अपराध दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार किया गया।

शराब पीने के लिए पैसे नही देने पर मारपीट, दो गिरफ्तार

जांजगीर-चांपा। जिले की बलौदा थाना पुलिस ने शराब पीने के लिए पैसे नही मिलने पर एक व्यक्ति से मारपीट करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मामले में आरोपियों के विरुद्ध धारा 119 (1), 296, 351 (2), 115(2), 3(5) बीएनएस के तहत कार्यवाही कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है। प्रार्थी निकेश कुमार सुमन निवासी बुचीहरदी थाना बलौदा से 06फरवरी 2026 को दोपहर में गांव का गोपी पाटले व जग्गू पाटले दोनो के द्वारा प्रार्थी से शराब पीने के लिए पैसे की मांग करने लगे, पैसा नही है बोलने पर दोनो पुराने रंजिश की बात पर से अश्लील गाली गलौच कर जान से मारने की धमकी देते हुए मारपीट कर चोट पहुंचाये थे।

100 दिन बाद सुलझा हत्या का मामला, पत्नी ने की अधेड़ की हत्या, नाबालिग बच्चों ने दिया था साथ

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

जशपुर। छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में करीब 100 दिन पुराने एक हत्या के मामले में पुलिस को सफलता मिली है। अधजली लाश की गुत्थी सुलझाते हुए पुलिस ने इस मामले में महिला व उसके तीन नाबालिग बच्चों को हिरासत में लिया है। पत्नी ने ही अपने पति की हत्या की थी और बच्चों की मदद से लाश को ठिकाने लगाया था। इस अंधेकत्ल की गुत्थी सुलझाने में पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ी।

दरअसल यह मामला अक्टूबर 2025 का है। 18 अक्टूबर 2025 को सिटी कोतवाली जशपुर पुलिस को सूचना मिली थी कि ग्राम पुरना नगर के तुरीटोंगरी में किसी व्यक्ति की अधजली लाश मिली है, जिसके शरीर का अधिकांश हिस्सा जला हुआ है। मौके पर पहुंची पुलिस शव का पंचनामा के बाद विवेचना शुरू की। पोस्ट मार्टम रिपोर्ट में हत्या की पुष्टि होने के बाद सिटी कोतवाली जशपुर में बीएनएस की धारा 103(1) व 238(क) के तहत अपराध पंजीबद्ध कर जांच विवेचना में लिया गया था।

जांच के दौरान पुलिस की पहली चुनौति शव की शिनाख्त थी। इसके लिए पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ी। आसपास थानों में गुमशुदा व्यक्तियों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही थी। इस बीच दिसंबर माह में एक व्यक्ति थाने पहुंचा और बताया कि उसका भाई महावीर राम भगत दिवाली के पहले से लापता है। उसने यह भी बताया कि भाई के गुमशुदा होने के बाद भी उसकी पत्नी सुमित्रा भगत के द्वारा कोई सुध नहीं ली जा रही है।

डीएनए सैंपल से हुई शव की पहचान

इसके बाद पुलिस ने शक के आधार पर सुमित्रा भगत व उसके

बच्चों का डीएनए सैंपल लेकर जांच के लिए भेजा। इनका डीएनए शव के सैंपल से मैच खाया और पुलिस ने शव की शिनाख्त महावीर राम भगत के रूप में की। इसके पुलिस को इस मामले में पहला शक सुमित्रा भगत पर ही हुआ। पुलिस ने सुमित्रा भगत को हिरासत में लिया और पूछताछ की। पहले तो उसने पुलिस को गुमराह करने का प्रयास किया लेकिन बाद भी सारी सच्चाई बता दी।

विवाद के कारण हत्या

पूछताछ में सुमित्रा ने बताया कि उसका पति मृतक महावीर राम भगत मनोरा में अकेला रहता था, वह आए दिन सुमित्रा भगत से दारू पीकर मारपीट करता रहता था जिसके कारण वह जशपुर में पति से अलग रहती थी। 18 अक्टूबर को महावीर जशपुर में सुमित्रा भगत के घर पहुंचा। इस दौरान उसकी पत्नी बाहर गई हुई थी। महावीर अपने साथ एक छोटी गैंती भी लाया था। जब सुमित्रा घर पहुंची तो दोनों में वाद विवाद होने लगा। इस सुमित्रा भगत ने मृतक महावीर के हाथ से छोटी गैंती को छीनकर, उसके चेहरा और सिर में वार कर दिया गया, जिससे वह जमीन पर गिर गया। इसके बाद सुमित्रा ने उसका गला दबा कर मार डाला।

नाबालिग बेटियों ने की मदद

इस दौरान उसकी नाबालिक बेटियां घर में ही थी, उसकी नाबालिक बेटियों द्वारा घटना को करते देखा। शव को एक कमरे में चादर से ढंककर रखा गया था। रात को सुमित्रा भगत अपने पड़ोस में रहने वाले एक 15 वर्षीय नाबालिक बालक व अपनी बेटियों की मदद से रात 10.00 से 11.00 बजे के शव को लकड़ी के बल्ली से बांधकर तूरी टोंगरी जंगल में ले गए और शव की पहचान न हो सके इसके पेट्रोल डाल कर जलाने का प्रयास किया गया था।

पुलिस के द्वारा आरोपियों के अपराध स्वीकार करने व प्रयास अपराध सबूत पाए जाने पर उन्हें विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर जेल भेजा जा रहा है, व विधि से संघर्षरत बालक व बालिकाओं को, बाल संप्रेषण गृह भेजने की कार्रवाई की गई। पुलिस के द्वारा मुख्य आरोपिया सुमित्रा भगत की निशानदेही पर, उसके कब्जे से हत्या में प्रयुक्त छोटी गैंती, पेट्रोल ले जाने में प्रयुक्त जरकिन व टॉर्च को भी जब्त कर लिया गया है। इस पूरी कार्रवाई में उप पुलिस अधीक्षक भावेश कुमार समरथ, थाना प्रभारी सिटी कोतवाली जशपुर निरीक्षक मोरध्वज देशमुख, सहायक उप निरीक्षक विपीन केरकेट्टा, व साइबर सेल जशपुर की टीम से उप निरीक्षक नसीरुद्दीन अंसारी, प्रधान आरक्षक अनंत मिराज किस्पोट्टा, थाना सिटी कोतवाली जशपुर से महिला प्रधान आरक्षक सावित्री भगत, आरक्षक राम प्रताप यादव, रवि भगत, आरक्षक रवि भगत, विनोद तिर्की, नगर सैनिक रवि डनसेना व थानेश्वर देशमुख की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

भिलाई में दर्दनाक हादसा : ट्यूशन टीचर ने लगाई आग, बाथरूम से मिला शव

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

भिलाई। भिलाई के सेक्टर-8 क्षेत्र में मंगलवार को एक दर्दनाक और रहस्यमय घटना सामने आई, जहाँ 50 वर्षीय महिला का जला हुआ शव उसके घर के बाथरूम से बरामद किया गया।

मृतका की पहचान रंजना देवांगन के रूप में हुई है, जो बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का कार्य करती थीं। जानकारी के अनुसार, शाम करीब 4:20 बजे पड़ोसियों ने घर के अंदर से धुआं निकलते देखा और जलने की तीखी गंध महसूस की। संदेह होने पर उन्होंने तुरंत महिला के बेटे और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने बाथरूम से जला हुआ शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।प्रारंभिक जांच में घटनास्थल से माचिस की तीलियां, ज्वलनशील पदार्थ और एक कथित सुसाइड नोट भी मिला है, जिसकी जांच की जा रही है।

हालांकि फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि महिला ने आत्महत्या की या किसी अन्य कारण से यह घटना हुई। पड़ोसियों का कहना है कि परिवार शिक्षित है और घर में किसी प्रकार के तनाव की जानकारी नहीं थी।

पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए जांच कर रही है। अधिकारियों के अनुसार, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत की वास्तविक वजह स्पष्ट हो सकेगी।

बेटी ने पिता को हंसिए से काट डाला, शराब के नशे में कर रहा था विवाद

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

कोरबा। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में एक बेटी ने अपने पिता की हंसिया से वार कर हत्या कर दी। घटना जिले के हरदी बाजार थाना क्षेत्र के ग्राम रलिया के लिममुंडा बस्ती का है। हत्या के बाद बेटी खुद बाहर निकली और पास पड़ोस व रिश्तेदारों को बताया कि उसने पिता की हत्या कर दी जाकर देख लें। इस घटना के बाद पूरे गांव में हड़कंप मच गया। ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी बेटी को गिरफ्तार कर लिया है।

मिली जानकारी के अनुसार अशोक कुमार केवट (55) अपने परिवार के साथ रलिया में रहते थे। पिछले आठ वर्षों से उनकी पत्नी और तीन बेटियां कोरबा के आदिले चौक में अलग रह रही थीं। बेटियां निजी कंपनी में काम करती हैं और एक पढ़ाई कर रही है। सोमवार को अशोक केवट की पत्नी और तीनों बेटियां किसी काम से रलिया गांव आई हुई थीं। एक बेटी का जाति प्रमाण पत्र बनवाना था, जिसके कारण वे वहीं रुकी हुई थीं। सोमवार की देर रात, बड़ी बेटी गीता केवट (27 वर्ष) और पिता अशोक केवट के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया।

विवाद इतना बढ़ गया कि गीता ने घर में रखे हंसिये से पिता के गले पर वार कर दिया, जिससे उनकी मौत हो गई। इसके बाद गीता खुद घर से बाहर आकर रिश्तेदारों को बताने लगी कि उसने अपने पिता की हत्या कर दी है। बताया जा रहा है कि अशोक केवट आदतन शराबी थे और उनकी हरकतों से परेशान होकर पत्नी और बच्चे उनसे अलग रहते थे। मृतक अशोक अक्सर अपनी मां और बेटी के चरित्र पर भी सवाल उठाते थे, जिससे वे परेशान थीं। आशंका जताई जा रही है सोमवार की रात को भी अशोक शराब के नशे में था और बेटी से विवाद कर रहा था। हरदी बाजार थाना प्रभारी प्रमोद डनसेना ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी बेटी को गिरफ्तार कर लिया गया है। आगे की कार्रवाई की जा रही है।

9 माह की गर्भवती महिला प्रधान आरक्षक गिरफ्तार, सोने की ज्वेलरी गबन का आरोप

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

दुर्ग। पुलिस विभाग की साख पर सवाल खड़े करने वाले एक मामले में बर्खास्त महिला प्रधान आरक्षक मोनिका गुप्ता को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। उन पर चोरी के मामले में जब्त की गई कीमती सोने की ज्वेलरी का गबन करने का आरोप है। गिरफ्तारी के समय वह 9 माह की गर्भवती बताई जा रही हैं।

4 जुलाई 2022 को सिंधिया नगर निवासी सोनल द्विवेदी के घर से 79 ग्राम सोने के जेवर और करीब 32 हजार नकद चोरी हुए थे। शिकायत मोहन नगर थाने में दर्ज हुई, जिसकी शुरुआती जांच तत्कालीन प्रधान आरक्षक मोनिका गुप्ता ने की। 30 जून 2023 को एक आरोपी की गिरफ्तारी के साथ लगभग 2.5 लाख कीमत की ज्वेलरी बरामद की गई। आरोप है कि बरामद जेवर पीड़िता को लौटाने या नियमानुसार मालखाने/आरक्षी केंद्र में जमा कराने के बजाय उन्होंने अपने पास रख लिए। वरिष्ठ अधिकारियों को जमा करने की सूचना दी गई, लेकिन जांच में जेवरात रिकॉर्ड के अनुसार जमा नहीं मिले। आंतरिक जांच में पाया गया कि जब्त सामान नियमानुसार सुरक्षित नहीं किया गया। पीड़िता की ओर से जेवर वापस न मिलने की शिकायत भी सामने आई। विभाग ने कई बार स्पष्टीकरण मांगा, पर संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

4 मार्च 2025 को मोहन नगर थाने में उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। इसके बाद वे फरार रहीं। पुलिस ने 2 फरवरी 2026 को उन्हें गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। जानकारी के मुताबिक, उनके खिलाफ पहले भी नौकरी दिलाने के नाम पर धन लेने का मामला विभागीय स्तर पर सामने आ चुका है, जिसमें पद के दुरुपयोग के आरोपों की जांच हुई थी।

वाहन की टक्कर से भालू की मौत

कोरबा। कोरबा के उरगा-पत्थलगांव नेशनल हाईवे पर एक जंगली भालू की वाहन की टक्कर से मौत हो गई। यह घटना सरदुकला के पास हुई, जब भालू सड़क पार कर रहा था। हादसे के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया। हादसे के बाद घटनास्थल पर ग्रामीणों और राहगीरों की भीड़ जमा हो गई। ग्रामीणों ने तत्काल वन विभाग को इसकी सूचना दी। सूचना मिलते ही रेंजर मृत्युंजय शर्मा के नेतृत्व में वन विभाग की टीम और पशु चिकित्सक डॉ. अंकित शुक्ला मौके पर पहुंचे। पशु चिकित्सक ने जांच के बाद भालू को मृत घोषित कर दिया। भालू के शव को कोसाबाड़ी डिपो लाया गया, जहां डीएफओ प्रेमलता यादव और एसडीओ एसके सोनी की उपस्थिति में पोस्टमार्टम के बाद अंतिम संस्कार किया गया।

पति ने पत्नी और नाबालिग बेटी को लगाई आग, हालत गंभीर

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

पेंड्रा/गौरेला। गौरेला क्षेत्र से एक बेहद गंभीर घरेलू हिंसा की घटना सामने आई है। जानकारी के अनुसार, एडिशनल एसपी बंगले के सामने मुख्य सड़क पर स्थित एक सुलभ शौचालय परिसर में रहने वाले एक व्यक्ति ने कथित रूप से शराब के नशे में अपनी पत्नी और नाबालिग बेटी पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी। दोनों गंभीर रूप से झुलस गईं और उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

आरोपी की पहचान शंकर पांडेय के रूप में हुई है, जो घटना के बाद से फरार बताया जा रहा है। घायल महिला शमा शर्मा और उनकी नाबालिग बेटी का इलाज जारी है। घटना महिला वॉर्डरूम क्षेत्र के पास हुई, जहां यह परिवार अस्थायी रूप से रहकर सुलभ शौचालय की देखरेख और संचालन का काम करता था।

प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, पति के शराब पीकर आने को लेकर पति-पत्नी के बीच विवाद हुआ, जिसके बाद गुस्से में आकर उसने यह कदम उठाया। आग लगने से वहां रखा घरेलू सामान भी जलकर नष्ट हो गया।

स्थानीय सूत्रों का कहना है कि दंपति मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं और काम के सिलसिले में यहां आए थे। पति के शराब सेवन को लेकर दोनों के बीच पहले भी विवाद होते रहे थे। घटना की सूचना के बाद पुलिस सक्रिय हुई है। अस्पताल से मेडिकल मेमो थाने भेजा जा चुका है, जिसके आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की तैयारी है। फिलहाल आरोपी की तलाश जारी है। जिला अस्पताल में बर्न यूनिट उपलब्ध न होने के कारण दोनों घायलों का उपचार सामान्य वार्ड (आईपीडी) में किया जा रहा है।

शातिर मोबाइल चोर गिरफ्तार, लाखों के मोबाइल जब्त

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

खेल मैदानों और परीक्षा केंद्रों के बाहर खड़े वाहनों को निशाना बनाकर मोबाइल चोरी करने वाले एक शातिर आरोपी को भिलाई नगर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से विभिन्न कंपनियों के लगभग 6 लाख रुपये मूल्य के मोबाइल फोन जब्त किए गए हैं।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार, 30 नवंबर को थाना भिलाई नगर क्षेत्र अंतर्गत सेक्टर-7 भिलाई में आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट के दौरान खड़ी गाड़ियों से 3 मोबाइल फोन, कार की चाबी एवं अन्य सामान चोरी होने की रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। इस संबंध में अपराध क्रमांक 663/2025 धारा 303(2) बीएनएस के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना शुरू की गई।

विवेचना के दौरान यह सामने आया कि खेल मैदानों एवं विभिन्न परीक्षा केंद्रों के बाहर खड़े दोपहिया वाहनों से मोबाइल चोरी की लगातार घटनाएं हो रही थीं।पुलिस

ने सतत निगरानी और मुखबिर सूचना के आधार पर संदेही शुभम श्रीवास को हिरासत में लेकर पूछताछ की। पूछताछ में आरोपी ने स्कूटी और अन्य वाहनों की डिकी से मोबाइल, पर्स, आधार कार्ड और एटीएम कार्ड चोरी करना स्वीकार किया। आरोपी ने यह भी कबूल किया कि वह चोरी किए गए मोबाइल फोन को सामान्य लॉक पैटर्न के जरिए अनलॉक कर संबंधित बैंक खातों से ऑनलाइन ट्रांजेक्शन करता था। आरोपी के कब्जे से विभिन्न कंपनियों के कुल मोबाइल फोन, जिनकी अनुमानित कीमत लगभग 6 लाख रुपये है, बरामद किए गए हैं। आरोपी को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।

इस पूरी कार्रवाई में थाना भिलाई नगर पुलिस टीम की सक्रिय और सराहनीय भूमिका रही। दुर्ग पुलिस आम नागरिकों से अपील करती है कि अपने मोबाइल फोन में फेस लॉक और फिंगरप्रिंट लॉक का उपयोग करें। मोबाइल गुम या चोरी होने की स्थिति में तत्काल संबंधित थाना में रिपोर्ट दर्ज कराएं, उपक्रमपोर्टल पर सूचना दें तथा अपने बैंक खातों की नियमित जांच करते रहें।

अंतरराज्यीय सीमाओं पर स्थित आबकारी जांच चौकियों को अन्य राज्यों की मदिरा के विरुद्ध विशेष अभियान चलाए : आबकारी आयुक्त

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

आबकारी विभाग की सचिव सह आबकारी आयुक्त आर. शंगीता ने आज नवा रायपुर स्थित कार्यालय में विभागीय कार्यों की विस्तृत समीक्षा की और आगामी महीनों के लिए जिलेवार विस्तृत कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। बैठक में सभी जिलों, उड़नदस्ता, छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड तथा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर सचिव सह आयुक्त ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए निर्धारित राजस्व लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ठोस रणनीति अपनाने, दुकानवार समीक्षा करने और अनुशासन के साथ कार्य संपादन के निर्देश दिए।

सचिव सह आबकारी आयुक्त श्रीमती शंगीता ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि मदिरा दुकानों में उपभोक्ताओं की मांग के अनुसार मदिरा स्कंध का संधारण सुनिश्चित करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि मदिरा दुकानों में उपभोक्ताओं के मांग के अनुरूप मदिरा की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए तथा निर्धारित दर से अधिक मूल्य पर बिक्री न हो। उन्होंने अधिकारियों को मदिरा दुकानों में नियम और अनुशासन का कड़ाई से पालन सुनिश्चित कराने के भी निर्देश दिए। दुकानों में उपलब्ध मदिरा को नियमानुसार दरों सहित रैकों में प्रदर्शित करने कहा गया, ताकि उपभोक्ताओं को पारदर्शिता और सुविधा मिल सके।

श्रीमती शंगीता ने बैठक में राजस्व लक्ष्य की जिलेवार समीक्षा करते हुए जिन जिलों ने जनवरी माह तक लक्ष्य की प्राप्ति की है, उन्हें सतत कार्य जारी रखने के निर्देश दिए गए। वहीं लक्ष्य से पीछे चल रहे जिलों को इसके कारणों की दुकानवार समीक्षा कर कमी की पूर्ति हेतु विस्तृत कार्य-योजना बनाकर तत्परता से अमल में लाने के निर्देश दिए गए। बैठक में अधिकारियों को इस बात की स्पष्ट हिदायत दी कि मदिरा में किसी प्रकार की मिलावट न होने पाए। इसके लिए सभी जिला अधिकारी स्पताह में कम से कम दो दिन आकस्मिक निरीक्षण करने और वहां पाई गई अनियमितताओं पर तत्काल कारवाई और दोषी कमचारियों को तत्काल कार्यमुक्त कर ब्लैकलिस्ट करने के निर्देश दिए गए। साथ ही, दुकानों में पेटीएम या अन्य कैशलेस भुगतान को बढ़ावा देने के लिए पृथक काउंटर की व्यवस्था के भी निर्देश दिए गए।

सचिव सह आयुक्त ने प्रदेश में संचालित बारों, क्लबों, होटलों और ढाबों की आकस्मिक जांच करने तथा समय पश्चात संचालन अथवा अवैध मदिरा विक्रय करने वालों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने अवैध मदिरा एवं अन्य मादक पदार्थों के निर्माण, परिवहन, तस्करी और विक्रय पर सख्त नियंत्रण रखने हेतु आवश्यकता पड़ने पर पुलिस विभाग से सहयोग लेने के निर्देश दिए गए। राज्य की अंतरराज्यीय सीमाओं पर स्थित आबकारी जांच चौकियों को अन्य राज्यों की मदिरा के विरुद्ध विशेष अभियान चलाने और सीसीटीवी कैमरों के सुचारू संचालन की निगरानी रखने के निर्देश दिए गए।

युवाओं के साथ काम कर खुद को जवान महसूस करता हूं

नेटफ्लिक्स के कार्यक्रम में वेब सीरीज 'फैमिली बिजनेस' की स्टार कास्ट ने शिरकत की। इस दौरान अभिनेता विजय वर्मा और अनिल कपूर ने फिल्म के कलाकारों और टीम की तारीफ की। अभिनेता विजय वर्मा ने कार्यक्रम के दौरान अपनी खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा, 'यह मेरे लिए बहुत खास है। मुझे अपने फेवरेट डायरेक्टर हंसल मेहता के साथ पहली बार काम करने का मौका मिला है। हंसल ने कमाल का काम किया है। उनका काम करने का तरीका बिल्कुल लेटेस्ट है। इस सीरीज में मेरा किरदार बेहद शानदार है। इसमें मैंने पहली बार विक्रम के साथ काम किया है और अनिल तो एवरग्रीन है ही। हमेशा उदार, सबसे डैशिंग, सबसे शानदार और सबसे कम उम्र के एक्टर जिनके साथ मैंने काम किया। उनकी एनर्जी और काम के प्रति जोश देखकर मजा आता है। रिया और नंदीश के साथ भी पहली बार शूटिंग की और बहुत मस्ती हुई। इस प्रोजेक्ट में कई 'पहली बार' वाली चीजें हुईं। अभिनेता अनिल कपूर ने भी अपनी खुशी जाहिर की। सबसे पहले उन्होंने शो की होस्ट जॉनी लिवर की बेटी जैमी लिवर के काम की तारीफ की। उन्होंने कहा, 'जैमी, मैं आपका बहुत बड़ा फैन हूं। याद है, मैंने आपको सबसे पहले कॉल किया था, जब आपने करियर भी शुरू नहीं किया था।' इसके बाद अभिनेता ने टीम की सराहना करते हुए कहा, 'यहां मौजूद सभी लोग, विजय, हंसल, विक्रम, प्रोड्यूसर, मेरा पुराना दोस्त आकाश और बाकी सभी कलाकार। आप सभी के साथ काम करके बहुत मजा आया। ये सभी युवा कलाकार मुझे कड़ी टक्कर दे रहे हैं। जैसा कि मैं कहता हूं, मेरा मुकाबला बढ़ रहा है। इनके साथ मुकाबला करके मैं खुद को जवान महसूस करता हूं। आप सभी युवाओं के साथ काम करके बहुत अच्छा लगता है।'

अदिति राव हैदरी ने बताई बॉलीवुड से दूरी की वजह

एक्ट्रेस अदिति राव हैदरी हाल ही में 'गांधी टॉक्स' में विजय सेतुपति के अपोजिट नजर आईं। अमर उजाला से खास बातचीत में उन्होंने बताया कि यह साइलेंट फिल्म उनके लिए कितनी खास थी? बातचीत के दौरान अदिति ने आर्ट फिल्मों की किस्मत पर बात की। साथ ही बीते कुछ साल में हिंदी फिल्मों में कम काम करने का कारण भी खुलकर बताया।

गांधी टॉक्स के लिए हामी भरने की सबसे बड़ी वजह क्या रही?

मेरा हमेशा से सपना रहा कि मैं किसी मूक फिल्म में काम करूं। जब गांधी टॉक्स मेरे पास आई, तो मैं सच में बेहद खुश हुई। फिल्म की टीम ने इसे और भी दिलचस्प बना दिया। जिस तरह किशोर (निर्देशक) ने इसका ढांचा बनाया, रहमान ने शानदार संगीत दिया और विजय सेतुपति, अरविंद स्वामी व सिद्धार्थ जाधव जैसे बेहतरीन कलाकार मिले। सबने मिलकर इस फिल्म को खास बना दिया। इसके अलावा मेरे किरदार को लेकर किशोर ने साफ कहा था कि यह सिर्फ एक लव इंटरेस्ट तक सीमित नहीं है, बल्कि कहानी का भावनात्मक हिस्सा भी है।

एक मूक फिल्म में अभिनय करना कितना मुश्किल होता है?

एक्टर होने के नाते हर फिल्म अपने आप में चुनौती होती है पर मूक फिल्म की चुनौतियां थोड़ी अलग ही होती हैं। इसमें संवाद ही नहीं होते। सब कुछ आपकी बॉडी लैंग्वेज, आपकी आखों और भीतर क्या महसूस हो रहा है उस पर निर्भर करता है। बिन कुछ कहे अपनी भावनाएं दिखाने की यह प्रक्रिया मुझे बहुत पसंद है।

आज का दर्शक प्रयोगात्मक फिल्में देखता है? या फिर जज करते हुए आगे बढ़ जाता है?

यह सच है कि मूक फिल्म कई लोगों के लिए नई चीज है, इसलिए इसकी पेस थोड़ी धीमी है। दुर्भाग्य से, हम फिल्मों को थिएटर में बढ़ने ही नहीं देते क्योंकि हम शुक्रवार के अंत तक ही फिल्म की किस्मत का फैसला कर देते हैं। सच तो यह है कि ऐसी फिल्मों को समय चाहिए। इन्हें ध्यान देकर महसूस करना पड़ता है।

चार साल में हमने आपको ज्यादा हिंदी फिल्मों में नहीं देखा। क्या वजह रही?

बात बस इतनी सी है कि अगर मुझे अच्छा काम मिलेगा तो ही मैं हिंदी फिल्में करूंगी। सच्चाई यह है कि हम जैसे लोग जो बाहर से बॉलीवुड में आते हैं, हमें हर फिल्म के साथ बॉलीवुड में खुद को साबित करना पड़ता है और मैं यह बिना किसी शिकायत या नकारात्मकता के कह रही हूं। ऐसा कभी नहीं होता कि हमने पांच फिल्मों के कॉन्ट्रैक्ट साइन कर लिए हों। हमें हर नई फिल्म में खुद को फिर से प्रूव करना पड़ता है। मैं 2011 से काम कर रही हूं और मेरा मानना है कि टैलेंट अपना रास्ता खुद बना लेता है। बाकी मैं खुशकिस्मत हूं कि मुझे देश के कई शानदार निर्देशकों के साथ काम करने का मौका मिला।

नीरज पांडे और मनोज बाजपेयी के साथ काम करने पर बोले अक्षय

भारतीय सिनेमा में जब किसी अभिनेता को बड़े फिल्मकारों और कलाकारों के साथ काम करने का मौका मिलता है, तो वह अनुभव उनके करियर को बदलने वाला साबित होता है। इस कड़ी में अभिनेता अक्षय ओबेरॉय को नीरज पांडे-रितेश शाह के निर्देशन और एक्टर मनोज बाजपेयी के साथ एक प्रोजेक्ट पर काम करने का अवसर मिला, जो उनके लिए सीखने और प्रेरणा लेने वाली यात्रा बन गई। आईएएनएस को दिए इंटरव्यू में उन्होंने अनुभवों को साझा किया। आईएएनएस से बात करते हुए अक्षय ओबेरॉय ने कहा, ''नीरज पांडे के साथ काम करना मेरे करियर के सबसे यादगार अनुभवों में से एक रहा है। वह जिस जॉनर में फिल्म बनाते हैं, उसमें उनकी पकड़ और समझ अनोखी है। सेट पर हर दिन उनके साथ काम करना किसी मास्टरक्लास से कम नहीं होता। उनकी सटीकता, कहानी पर पकड़ और विजुअल बनाने का तरीका मुझे लगातार सीखने का अवसर देता रहा है। मेरा मानना है कि इस फिल्म ने मुझे एक बेहतर अभिनेता बनने में मदद की है और मेरी कला को और निखारा है।'' फिल्म के निर्देशक रितेश शाह को लेकर अक्षय ने कहा, ''उनके काम की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह किरदारों और भावनाओं को गहराई से समझते हैं। उनके निर्देशन में हर सीन में एक वास्तविकता और वजन आता है। मैंने उनके साथ काम करते हुए हर सीन को अधिक संवेदनशील और प्रभावशाली ढंग से निभाने की कला सीखी। यह अनुभव मेरे लिए चुनौतीपूर्ण होने के साथ-साथ बेहद संतोषजनक भी रहा।'' मनोज बाजपेयी के साथ स्क्रीन साझा करने के अनुभव को भी अक्षय ने प्रेरणा स्रोत बताया। उन्होंने कहा, ''मनोज बाजपेयी सिर्फ एक अभिनेता नहीं, बल्कि एक पूरी संस्था हैं। उनकी मेहनत, अनुशासन और काम के प्रति जुनून पूरी टीम को प्रभावित करता है। ऐसे कलाकारों के साथ काम करना मेरे लिए सीखने और खुद को बेहतर बनाने का अवसर रहा। इस अनुभव के लिए मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानता हूं। मेरा दर्शकों से आग्रह है कि वह इस फिल्म को देखें और अभिनय का आनंद लें।'' अक्षय ओबेरॉय जल्द ही फिल्म 'टॉक्सिक' में भी नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में यश मुख्य भूमिका में हैं। इसमें कियारा आडवाणी, नयनतारा, हुमा कुरैशी, रुक्मिणी वसंत और तारा सुतारिया भी अहम किरदार निभा रही हैं। फिल्म को गीतू मोहनदास ने निर्देशित किया है और इसे कन्नड़ और अंग्रेजी में एक साथ शूट किया गया है। इसके अलावा, इसे हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम और कई अन्य भाषाओं में डब करने की योजना है। 'टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' 19 मार्च को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

भूमि पेडनेकर की 'दलदल' बनी ग्लोबल ओटीटी हिट

भूमि पेडनेकर कभी भी तयशुदा फॉर्मूले पर चलने वाली कलाकार नहीं रही हैं। उनकी फिल्मोग्राफी साफ दिखाती है कि वह ग्लैमर और जरूरत से ज्यादा ड्रामा से दूर, अलग और दमदार कहानियों को चुनती हैं। अपनी पहली फिल्म से ही भूमि ने दम लगा के हईशा, टॉयलेट : एक प्रेम कथा, पति पत्नी और वो, बधाई दो, थैंक यू फॉर कमिंग, शुभ मंगल सावधान, बाला, भीड़, भक्षक, सांड की आंख जैसी फिल्मों के जरिए समाज से जुड़े मुद्दों पर बात करने की हिम्मत दिखाई है। अब उनकी ग्लोबल ओटीटी हिट सीरीज दलदल भी इसी कड़ी का हिस्सा है। भूमि की फिल्मों और शोज में दिखावा कम और कंटेंट ज्यादा होता है। यही वजह है कि दर्शक उनकी कहानियों से जुड़ते हैं और बार-बार उन्हें देखना चाहते हैं। दलदल के ओटीटी हिट बनने के साथ भूमि ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि उनके लिए माध्यम नहीं, बल्कि कला और अभिनय सबसे जरूरी है। बड़े पर्दे पर अपनी मजबूत पहचान बनाने के बाद, भूमि ने अमेजन प्राइम की टॉप-ट्रेंडिंग साइकोलॉजिकल क्राइम थ्रिलर दलदल के साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी अपनी पकड़ साबित की है। यह सीरीज अमेरिका, यूके, यूएई समेत कई देशों में ट्रेंड कर रही है और दुनियाभर में सराही जा रही है। इसकी सफलता भूमि की बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाती है और उन्हें भारत की सबसे भरोसेमंद और निडर अभिनेत्रियों में शामिल करती है। दलदल को मिल रही वैश्विक सराहना यह भी दिखाती है कि भूमि हमेशा कंटेंट और चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं को प्राथमिकता देती हैं। जहां कई कलाकार ऐसे किरदारों से हिचकते हैं जिनमें शारीरिक बदलाव, गहरी भावनात्मक तैयारी और व्यक्तित्व में बदलाव की जरूरत होती है, वहीं भूमि ने इन्हें अपनी ताकत बना लिया है। सिनेमाघरों से लेकर दुनियाभर के स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म तक, भूमि ऐसा काम कर रही हैं जो खुद बोलता है। दलदल की सफलता के साथ यह साफ है कि भूमि सतीश पेडनेकर हर बार बड़ा जोखिम लेती हैं और उसे पूरी मजबूती से निभाती हैं।

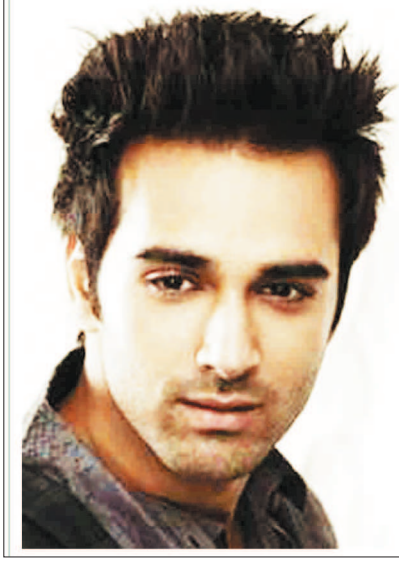

ओवरनाइट ऑडिशन से ओवरनाइट स्टारडम ने कैसे बदली पुलकित सम्राट की ज़िंदगी

भारतीय टेलीविजन में ओवरनाइट सक्सेस बहुत कम लोगों को मिलती है और उन्हीं बेहद कम लोगों में एक नाम पुलकित सम्राट का भी शामिल है। जी हाँ, एक साधारण से टीवी ऑडिशन, जिसे उन्होंने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ स्वीकार किया था, वही आगे चलकर ना सिर्फ उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा मोड़ साबित हुआ, बल्कि उसी ने उन्हें हर घर का चहिता चेहरा भी बना दिया।

खुद को वर्सेटाइल एक्टर के तौर पर देखनेवाले पुलकित सम्राट अपने करियर की शुरुआत टीवी नहीं करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि डेली सोप्स ज्यादातर मेलोड्रामा तक ही सीमित रहते हैं। लेकिन शायद किस्मत को कुछ और मंजूर था और उसी ने उन्हें लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा दिया। इस सिलसिले में पुलकित सम्राट कहते हैं, 'मुझे याद है मैंने साफ कहा था कि मैं टीवी सीरियल टाइप का काम नहीं करना चाहता, बल्कि मैं कुछ अलग और वर्सेटाइल करना चाहता था। लेकिन फिर कास्टिंग टीम ने मुझे समझाया कि यह किरदार बाकी टीवी रोल्स से अलग है। इसमें गहराई के साथ कुछ नया करने का मौका था और सबसे अहम बात यह थी कि मुझे एकता कपूर से मिलने का अवसर मिलने वाला था। इसी बात ने मुझे मुंबई आने के लिए राजी कर लिया और मैं रातों-रात दिल्ली से मुंबई आ गया।' गौरतलब है कि एकता कपूर पहले ही पुलकित की तस्वीरें देख चुकी थीं और उनसे मुलाकात के बाद वे निश्चिंत हो चुकी थी कि उनके सीरियल 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' के लक्ष्य वीरानी वही होंगे। ऐसे में मुंबई आते ही उनकी शूमिंग शुरू हुई। उन्हें नया हेयरकट दिया गया और स्क्रीन टेस्ट कराया गया और फुटेज देखते ही उनके नाम पर मोहर लगाते हुए एकता कपूर ने कहा, 'ओके, डन। रेडी।' हालांकि इस बड़ी सफलता के बीच भी पुलकित को रह-रहकर अपना परिवार याद आ रहा था, जिन्हें वे बिना बताए दिल्ली छोड़कर मुंबई चले आए थे। उनसे मिलने की तड़प और अपनी कामयाबी की खबर देने के लिए उन्होंने पीठ दर्द का बहाना बनाते हुए एक रात के लिए दिल्ली लौटने की इजाजत मांगी और पहुँच गए अपने पैरेंट्स से मिलने। दिल्ली एयरपोर्ट पर अपने पैरेंट्स को देखते ही वे भावुक हो उठे। उस घटना को याद करते हुए पुलकित बताते हैं, 'आंखों में आंसू लिए मैं उनके गले लगा। शब्द बहुत कम थे, बस थी तो भावनाएं। हालांकि कुछ ही घंटों बाद मैं फिर से मुंबई लौट आया लेकिन इस बार एक नए आत्मविश्वास और बदली हुई जिंदगी के साथ लौटा था।'

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में पुलकित की एंट्री बेहद खास रही थी। शो की जेनरेशन लीप के साथ उन्हें लॉन्च किया गया था और वे 'वो कृष्णा है' गीत के साथ सीधे दर्शकों के दिलों में उतर गए। गौर करनेवाली बात ये भी है कि यह किसी टीवी किरदार के लिए बनाए गए शुरुआती फुल-लेंथ लॉन्च सॉन्ग्स में से एक था। और इस तरह मौनी रॉय के साथ मिलकर वह नई पीढ़ी का चेहरा बने। इस सिलसिले में पुलकित कहते हैं, 'रातों-रात मैं एक जाना-पहचाना नाम बन चुका था और फिर उसके बाद मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

'ग्लोरी' से ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कदम रखने जा रहे हैं पुलकित

'फुकरे' की लोकप्रियता के बाद 'तैश', 'सनम रे' और 'राहु केतु' में अलग-अलग तरह के किरदार निभाते हुए फिलहाल वे 'ग्लोरी' से न सिर्फ ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कदम रखने जा रहे हैं, बल्कि पहली बार बॉक्सर का किरदार निभाते हुए अपने करियर को लगातर आगे बढ़ा रहे हैं। फिलहाल पुलकित सम्राट की यह कहानी बताती है कि कभी-कभी एक सही मौका पूरी जिंदगी बदल देता है, लेकिन उस मौके को आगे ले जाने के लिए मेहनत, धैर्य और सही फैसले सबसे जरूरी होते हैं।

रंग बदलती है कराकुल झील

दुनियाभर में कई ऐसे झील हैं जो अपने किसी ना किसी अनोखे कामों के लिए प्रसिद्ध है। आज हम आपको एक ऐसी ही झील के बारे में बताने जा रहे हैं। जी दरअसल हम बात कर रहे हैं 'कराकुल झील' की। यह झील भारत से कोसों दूर मध्य-एशिया के ताजिकिस्तान में है।

इस झील को मध्य-एशिया की चुनिंदा खूबसूरत और अद्भुत झीलों में गिना जाता है। यह झील लगभग 380 वर्ग किमी में फैली है। यहाँ चारों तरफ फैले पहाड़ और रेगिस्तान सभी को आकर्षित करते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि इस झील का पहला नाम महारानी विक्टोरिया पर रखा गया था, लेकिन कुछ ही समय बाद में सोवियत संघ द्वारा इस झील का नाम 'काराकुल' रख दिया गया, जिसका मतलब होता है काली झील। कहा जाता है इस झील का निर्माण धरती से उल्कापिंड के टकराने की वजह से हुआ था। इस घटना को ढाई करोड़ साल पहले हुई बताया जाता है। वैसे यह कोई नहीं जानता कि इस बात में कितनी सच्चाई है। यह झील नमक की झील है, और इसे चारों तरफ से घेर दिया गया है, ताकि इसका पानी बाहर न जा सके। बताया जाता है इस झील में इतना नमक पाया जाता है कि इसमें एक खास प्रजाति की मछली को छोड़कर कोई और जीव नहीं रहता।

वैसे इस झील को देखने लोग दूर-दूर से आते हैं क्योंकि यह झील दिन में कई बार अपने रंग को बदलती है। यह झील अगर सुबह से शाम तक में कभी नीली, कभी गहरे हरे रंग की, तो कभी फिरोजी रंग की हो जाती है। वही आज तक यह नहीं पता चल पाया कि ऐसा क्यों होता है। इस झील में भारी मात्रा में नमक की मौजूदगी के चलते आप इसमें बोटिंग भी नहीं कर सकते।

जापान की ये झीलें आपको दूसरी दुनिया में ले जाएंगी

जापान एक ऐसी जगह है जो अपनी विशाल आबादी और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यहां के खानपान से लेकर प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों को अनायास की आकर्षित करता है। जापान वास्तव में कई कारणों से लोकप्रिय है। यहां पर खूबसूरत पहाड़ों से लेकर एंटरटेनमेंट पार्कस, ऐतिहासिक स्थलों से लेकर खूबसूरत झीलें आदि देखने के लिए बहुत कुछ है। जापान में सैकड़ों खूबसूरत झीलें हैं जो इस देश को एक बेहतरीन पर्यटन स्थल बनाती हैं। यहां पर स्थित हर झील की अपनी एक अलग विशेषता है और इसलिए यहां की झीलें सिर्फ पर्यटकों के लिए ही नहीं, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए भी उतना ही महत्व रखती हैं। तो चलिए आज हम आपको यहां पर स्थित कुछ खूबसूरत झीलों के बारे में बता रहे हैं, जिनके बारे में आपको भी जरूर जानना चाहिए-

कावागुची झील

यह झील माउंट फूजी पर स्थित है और इसे एक वर्ल्ड हैरिटेज साइटमाना जाता है। यह जापान की सबसे प्रसिद्ध झीलों में से एक है। झील तीन तरफ से पर्वत श्रृंखलाओं से घिरी हुई है और चौथी तरफ वह जगह है जहाँ माउंट फूजी है। जब मौसम अच्छा होता है तो इस झील में माउंट फूजी का प्रतिबिंब दिखाई देता है। इसे वास्तव में 'रिवर्स फूजी' कहा जाता है और यह सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है जिसे आप देख सकते हैं। आप यहां सभी मौसमों का अनुभव कर सकते हैं। चेरी वसंत ऋतु में खिलती है, गर्मियों में हरे भरे जंगल में आप विभिन्न खेलों में भाग ले सकते हैं, शरद ऋतु में गिरे हुए पत्ते और सर्दियों में बर्फ से ढकी चोटी। वैसे, रिवर्स फूजी देखने का सबसे अच्छा समय सर्दियों के दौरान होता है।

बीवा झील

यह जापान की सबसे बड़ी झीलों में से एक है जो कासुमीगौरा झील से पहले आती है और लाखों साल पहले की है। लेक बीवा जापान शिगा प्रान्त में है और इसके आसपास बहुत सारे छोटे शहर हैं। बीवा वास्तव में एक ग्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट है और झील इंस्ट्रूमेंट के आकार जैसी दिखती है, शायद इसलिए इसे बीवा झील कहा जाता हहै। चूंकि यह एक मीठे पानी की झील है, आप ट्राउट सहित मीठे पानी की मछलियाँ और भी बहुत कुछ पा सकते हैं। झील के चारों ओर के शहर मंदिरों, महलों, ऑनसेन और रिसॉर्ट्स से भरे हुए हैं।

कासुमीगौरा झील

कासुमीगौरा झील, बीवा जापान के बाद दूसरी सबसे बड़ी झील है। हालाँकि झील का उपयोग ज्यादातर मछली पकड़ने के उद्योगों द्वारा किया जाता था, लेकिन अब यह एक बहुत ही लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यहां पर गर्मी बिताना एक अच्छा विचार है क्योंकि आप कई नावों या जहाजों की मदद से पानी में घूमने के लिए ले जा सकते हैं। 'होबिकुब्यून' नामक एक जहाज है जहाँ आप फुरसत में नौकायन कर सकते हैं। जहाजों के अपने हॉट स्प्रिंग्स या ओन्सेन्स भी होते हैं, जो बेशक कृत्रिम होते हैं, लेकिन फिर भी अच्छी तरह से काम करते हैं।

यामानाका झील

यह माउंट फूजी पर स्थित पाँच में से सबसे बड़ी झीलों में से एक है। झील पर आप कई बेहतरीन एक्टिविटीज कर सकते हैं। आप साइकिल ले सकते हैं और झील के चारों ओर सवारी कर सकते हैं या विंडसर्फिंग, वाटर-स्कीइंग, तैराकी, मछली पकड़ने या नौका विहारकर सकते हैं। यदि आप गर्मियों के दौरान यात्रा करते हैं तो यह नाव की सवारी के लिए सबसे अच्छा समय होगा। अगर आप सर्दियों के दौरान घूमने जाते हैं तो आप बर्फ में छेद करके मछली पकड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

चुज़ेनजी झील

यह झील टोक्यो के पास जापान की प्रमुख झीलों में से एक है। झील निक्को शहर के ठीक ऊपर पहाड़ों में स्थित है। यदि आप गर्मियों के दौरान यात्रा करते हैं, तो आप वास्तव में यहाँ के पश्चिमी इतिहास पर एक शानदार नज़र डाल सकते हैं। यहां झील के आसपास ऐसी कई इमारतें हैं। ग्रीष्म ऋतु के दौरान, झील आसपास के वातावरण को ठंडा रखती है और शरद ऋतु में यहां का नजारा बेहद ही अद्भुत होता है। आप चुज़ेनजी स्काईलाइन से यहां का बेहतरीन दृश्य देख सकते हैं।

पानी से जमीन पर आया स्केटिंग का गेम

स्केटिंग का गेम जितना आसान है, उतना ही खतरनाक इसलिए इस गेम की पूर्ण जानकारी अत्यंत जरूरी है।

1950 के समय कैलिफोर्निया के अधिकांश सर्फर्स जब पानी पर सर्फिंग किया करते थे तो उन्हें यह आइडिया आया कि क्यों ना सड़क पर सर्फ किया जाए। अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि पहला स्केटबोर्ड आखिर किसने तैयार किया था। इस तरह का दावा करने वाले कई लोग थे जिनका कहना था कि स्केटबोर्ड का इन्वेंशन उन्होंने ही किया है। पहला स्केटबोर्ड वुडन बॉक्स या बोर्ड जैसा बनाया गया था, जिस पर रोलर स्केट व्हील्स लगे हुए थे। जब लोगों ने सड़कों पर स्केटबोर्ड पर स्केट करना शुरू किया तो अनुभव की कमी के कारण गिरते भी काफी थे। 1995 में ईएसपीएन ने रोड्स आईलैंड पर पहली बार एक्स गेम्स का आयोजन किया जिसमें स्केटबोर्डिंग को भी शामिल किया गया था। इससे स्केटबोर्डिंग को काफी पॉपुलैरिटी भी मिली। ईयर 2000 से मीडिया में यह और भी छा गया जब इससे रिलेटेड वीडियो गेम्स बनने लगे और बच्चों को बहुत पसंद भी आने लगे।

स्केटिंग की पहली क्लास

पहली बार स्केटिंग करने वालों को यह समझ नहीं आता कि आखिर इसे शुरू कैसे किया जाए। यदि तुम भी स्केटिंग करना चाहते हो तो सबसे पहले तुम्हें लाने होंगे स्केट शूज। यूं तो नॉर्मल शूज से भी स्केटिंग की जा सकती है लेकिन यह मुश्किल भी होता है और थोड़ा खतरनाक भी। दरअसल स्केट शूज का बॉटम काफी बड़ा होता है ताकि बोर्ड पर सही ग्रिप मिल सके और साथ ही कई और फीचर्स भी इसमें होते हैं। स्केटिंग के लिए दूसरी सबसे जरूरी चीज होती है हेलमेट। साथ ही प्रोटेक्टिंग पैड्स भी महत्वपूर्ण होते हैं। तुम्हें किन चीजों की जरूरत है यह इस पर निर्भर करता है कि तुम स्केट बोर्ड पर किस तरह की एक्टिविटी करते हो।

गूफी या रेग्युलर क्या होगा तुम्हारा स्टाइल?

जब बैलेंस बनाना सीख जाओ तो अब बारी है तुम्हारे स्टाइल की। स्केटबोर्ड पर अलग-अलग तरीके से खड़े होने को स्टेंस कहा जाता है, जो खिलाड़ी राइट फुट से स्केटबोर्ड पर खड़े होते हैं उन्हें गूफी स्टेंस कहा जाता है और जो लेफ्ट से खड़े होते हैं, वो रेग्युलर कहलाते हैं। तुम इस तरह अपना स्टाइल चुन सकतेहो।

बैलेंसिंग से करो शुरू

प्रोटेक्शन की सारी चीजें तो इकट्ठी हो गई लेकिन स्केटबोर्ड पर सीधे ही कोई स्टंट ट्राय करना खतरनाक हो सकता है। स्केटिंग में सबसे पहले सही तरीके से स्केटबोर्ड पर खड़े होने की प्रैक्टिस करनी है। स्केटबोर्ड को घास पर या अपने घर के कारपेट पर सैट करो और सबसे पहले उस पर खड़े होकर बैलेंस बनाने की कोशिश करो। जैसे ही बैलेंस बनना शुरू हो जाए फिर अलग-अलग पोजिशन पर अपने पैरों को घुमाने की कोशिश करो। अपने बोर्ड के साइज को पूरी तरह से एक्सपीरिएंस करो और उस पर खड़े रहने की प्रैक्टिस करते रहो।

इन देशों के पास नहीं हैं एक भी एयरपोर्ट

किसी दौर में हवाई जहाज पर बैठना लोगों के लिए बड़ी बात हुआ करती थी। तब ज्यादातर अमीर लोग ही हवाई यात्रा अफॉर्ड कर पाते थे, लेकिन आज ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। आज आप उचित दामों में एरोप्लेन की यात्रा का मजा उठा सकते हैं। एरोप्लेन की आवाजाही के लिए ही दुनिया भर में कई एयरपोर्ट्स बनाए गए हैं। आज के समय में हर देश की यह ख्वाहिश होती है कि उनके पास आलीशान एयरपोर्ट हों, जहां से विदेश की यात्रा आसान हो सके।

भारत में भी कई ऐसे एयरपोर्ट्स हैं, जिन्हें उनकी आलीशान खूबसूरती के लिए जाना जाता है। आज ज्यादातर देशों में हवाई यात्राओं के लिए एयरपोर्ट्स बनाएं गए है, मगर कुछ ऐसे देश भी हैं जहां हवाई यात्रा मुमकिन नहीं, क्योंकि उन देशों के पास एक भी एयरपोर्ट नहीं है। आज हम आपको ऐसे ही देशों के बारे में बताएंगे, जहां इतने समय के बाद भी एयरपोर्ट नहीं तैयार किए जा सके हैं। आइए जानते हैं इन देशों के बारे में-

लिस्टेंस्टीन - यूरोप के ज्यादातर देश सुविधाओं से लैस हैं। इसके बावजूद भी यहां पर कुछ ऐसे देश मौजूद हैं, जिनके पास एक भी एयरपोर्ट नहीं मौजूद है। लेस्टेंस्टीन भी इन देशों में एक है, बता दें कि यह देश ऑस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड के बीच स्थित है और यहां पर जर्मन भाषा बोलने वाले लोग भारी तादात में मौजूद हैं। बता दें कि लिस्टेंस्टीन दुनिया के ऐतिहासिक देशों में एक है, जहां पर पाषाण युग के कई प्रमाण देखने को मिलते हैं। इसके अलावा इस छोटे से देश की एक खासियत यह भी है कि यहां पर एक भी एयरपोर्ट मौजूद नहीं है। हालांकि यहां पर एक हेलीपोर्ट जरूर मौजूद है, जिसके जरिए हवाई यात्रा की जा सकती है। यहां जाने के लिए लोग स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख हवाई अड्डे की तरफ अपना रुख करते हैं। वहां पहुंचने के बाद रोड के माध्यम इस देश में पहुंचा जा सकता है।

सैन मैरिनो- सैन मैरिनो यूरोप का छोटा सा देश है। इस देश को यूरोप का सबसे पुराना गणराज्य माना जाता है। इसके अलावा इस देश की गिनती दुनिया के सबसे छोटे देशों में की जाती है। बता दें कि इतने समय बाद भी इस देश में एक भी एयरपोर्ट नहीं बनाया गया है। यहां जाने वाले लोगों के इटली के एयरपोर्ट की मदद लेनी पड़ती है। हालांकि एयरपोर्ट न होने का असर यहां के टूरिज्म पर नहीं पड़ता है, लोग इटली के जरिए यहां पर घूमने के लिए आते रहते हैं।

वेटिकन सिटी- वेटिकन सिटी का नाम आप में से ज्यादातर लोगों ने सुना होगा। इसे दुनिया का सबसे छोटा देश माना जाता है, इसके साथ ही यह देश ईसाई धर्म के संप्रदाय रोमन कैथोलिक चर्च का केंद्र है। बता दें कि यहां पर ईसाई धर्म के सर्वोच्च धर्मगुरु पोप का निवास करते हैं। इतने प्रसिद्ध होने के बावजूद भी इस देश में एक भी एयरपोर्ट नहीं मौजूद है, माना जाता है कि यह देश इतना छोटा है कि यहां पर एक हवाई अड्डा तैयार करने के लिए जगह ही नहीं है। यहां जाने के लिए सैलानियों को रोम एक नजदीकी एयरपोर्ट तक पहुंचना होता है, जिसके बाद रोड की मदद से आप बाकी की यात्रा पूरी कर सकते हैं।

अंडोरा- यूरोप में कई ऐसे देश मौजूद हैं, जो कि काफी छोटे हैं। अंडोरा भी इन्हीं देशों में से एक है। बता दें कि यह दुनिया का 16वां सबसे छोटा देश है, जो कि एरिया और जनसंख्या में काफी कम है। 85,000 की जनसंख्या होने के कारण यहां पर एक भी एयरपोर्ट नहीं हैं, लेकिन इस देश के पास 3 प्राइवेट हेलीपैड जरूर हैं। यहां से सबसे करीब स्टेशन स्पेन में है, जो कि अंडोरा से करीब 12 किलोमीटर की दूरी पर है। एयरपोर्ट की सुविधा न होने के बावजूद भी यहां पर यात्रा करने वालों का तांता लगा रहता है।

मोनाको- यह भी पश्चिम यूरोप में बसा एक छोटा सा देश है, इसे दुनिया का दूसरा सबसे छोटा देश माना जाता है। बता दें कि यह फ्रांस और इटली के बीच में मौजूद है। हैरानी की बात यह कि इस देश में किसी भी देश के मुकाबले सबसे ज्यादा प्रति व्यक्ति करोड़पति मौजूद हैं, लेकिन इसके बावजूद भी यहां एक भी एयरपोर्ट नहीं मौजूद है। यहां जाने के लिए नजदीकी एयरपोर्ट फ्रांस में है, जो कि मोनाको से कुछ दूरी पर स्थित है।

विधायक रिकेश सेन की त्वरित पहल : हीमोफीलिया पीड़ित छात्र के लिए उपलब्ध कराया जीवनरक्षक इंजेक्शन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

वैशाली नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक रिकेश सेन ने एक बार फिर अपनी संवेदनशीलता का परिचय देते हुए एक हीमोफीलिया पीड़ित छात्र की मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाया है। आपको बता दें कि भिलाई टाउनशिप निवासी कक्षा दसवीं के छात्र आरूष के लिए विधायक ने तत्काल हीमोफीलिया बी फेक्टर-9 इंजेक्शन की व्यवस्था की और उसे छात्र की माता श्रीमती बी शारदा पखाले को सौंपा।

दसवीं के छात्र का 17 से है एग्जाम

छात्र आरूष हीमोफीलिया बी (फेक्टर-9 की कमी) से पीड़ित है। इस बीमारी में शरीर में क्लॉटिंग फैक्टर्स की कमी के कारण चोट लगने पर खून आसानी से नहीं जमता, जिससे आंतरिक और बाहरी रक्तस्राव का गंभीर खतरा बना रहता है। समय पर इंजेक्शन न मिलने से असहनीय दर्द और अंगों के खराब होने का डर रहता है।

आरूष की बोर्ड परीक्षाएं 17 फरवरी से शुरू होने वाली हैं। ऐसे नाजुक समय में परिवार इंजेक्शन की अनुपलब्धता के कारण काफी परेशान था। परिजनों ने जब विधायक रिकेश सेन से मदद की गुहार लगाई, तो उन्होंने मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल इंजेक्शन मंगवा कर पाखले परिवार को राहत पहुंचाई।

अस्पताल प्रबंधन को कड़े निर्देश

विधायक श्री सेन ने केवल तात्कालिक सहायता ही नहीं की बल्कि भविष्य में ऐसी समस्या दोबारा न आए, इसके लिए ठोस कदम उठाए हैं। उन्होंने सिविल सर्जन और सुपेला शासकीय अस्पताल प्रभारी से सीधी चर्चा की।

सुपेला अस्पताल में भविष्य के लिए 'हीमोफीलिया फेक्टर-9' इंजेक्शन की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करने के कड़े निर्देश दिए। विधायक ने परिवार को आश्वस्त किया कि उन्हें स्वास्थ्य संबंधी ऐसी दिक्कतों का सामना अब दोबारा नहीं करना पड़ेगा।

श्री सेन ने कहा कि "जनता की सेवा और विशेषकर बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा में आने वाली बाधाओं को दूर करना मेरी प्राथमिकता है। आरूष अपनी परीक्षा बिना किसी शारीरिक कष्ट के दे सके यही हमारी कोशिश है।" इस मानवीय पहल के लिए छात्र के परिजनों ने विधायक का आभार व्यक्त किया है।

खास खबर

मुगल, अकबर, बाबर, कांग्रेस का शासन नहीं है ये मोदी, विष्णु का शासन है- डॉ. सलीम राज

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ राज्य वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम राज ने कहा है कि कांग्रेस देश में तुष्टिकरण की राजनीति के चलते मुसलमानों को कटघरे में खड़ा करने का प्रयास किया गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि मुगल शासक अकबर और बाबर का शासन नहीं है कांग्रेस शासनकाल में तुष्टिकरण की राजनीति कर मुसलमानों के मन में अपनी ही मातृभूमि के प्रति भ्रम और भय पैदा किया गया।

डॉ. सलीम राज ने कहा कि, राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम को मुस्लिम एवं कांग्रेस अधिवेशनों से दूर रखा गया और मुसलमानों को यह कहकर गुमराह किया गया कि यह उनके मजहब के खिलाफ है, जबकि इस्लाम में स्पष्ट लिखा है कि जिस देश में रहते हैं, उससे प्रेम करना, उसके कानून और संविधान का सम्मान करना हर नागरिक का कर्तव्य है। 'मां तुझे सलाम' जैसे शब्द भी इसी भावना को मजबूत करते हैं।

उन्होंने कहा कि आज देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ऐसी सरकार है जो सबका साथ, सबका विकास और सबकी समृद्धि के मंत्र पर कार्य कर रही है। भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय हित और मानवता के मूल्यों के साथ काम कर रही है। देश संविधान से चलेगा, न कि शरीयत कानून से, और यही भारत की असली ताकत है। सलीम राज ने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी ने फूट डालो और राज करो की नीति अपनाकर समाज को बांटने का काम किया और वोट बैंक की राजनीति के लिए हिंदू-मुस्लिम के बीच दूरियां बढ़ाई। उन्होंने कहा कि कांग्रेस शासन में देश में बार-बार दंगे हुए, जिससे सामाजिक ताना-बाना कमजोर हुआ, जबकि भाजपा शासनकाल में देश दंगा-मुक्त है। उन्होंने मुस्लिम समाज से आह्वान किया कि वे आगे आएं, देश के संविधान का पालन करें और समान नागरिक संहिता (UCC) का समर्थन करें, ताकि समाज समानता और विकास की राह पर आगे बढ़ सके।

छत्तीसगढ़ की विष्णु देव साय सरकार का उदाहरण देते हुए सलीम राज ने कहा कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के अंतर्गत 6,412 कन्याओं का सामूहिक विवाह संपन्न कराया गया, जिसमें हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध समुदाय के लोगों ने अपने-अपने रीति-रिवाज से विवाह किया। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतीय जनता पार्टी वास्तव में सबका साथ, सबका विकास की भावना के साथ काम कर रही है।

जीरो टॉलरेंस की मुहिम के बीच आरक्षक ही निकला चिट्टा का सौदागर, गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राजधानी में सूखे नशे के खिलाफ चल रही जीरो टॉलरेंस नीति के बीच पुलिस महकमे में ही बड़ी सेंध का मामला सामने आया है। आमानाका थाना में पदस्थ आरक्षक हिमांशु वर्मन को प्रतिबंधित मादक पदार्थ चिट्टा (हेरोइन) के अवैध विक्रय करते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया गया है। आरोपी के कब्जे से लगभग 1 ग्राम चिट्टा बरामद हुआ है, जिसकी कीमत करीब 8 हजार रुपए बताई जा रही है। यह गिरफ्तारी केवल एक आरोपी की नहीं, बल्कि सिस्टम के भीतर तक घुसपैठ कर चुके नशे के नेटवर्क की ओर इशारा करती है। जिस महकमे पर नशे के खिलाफ सख्ती की जिम्मेदारी है, उसी के भीतर से इस तरह का मामला सामने आना गंभीर चिंता का विषय बन गया है।

11 फरवरी को पुलिस को सूचना मिली कि नीलकंठेश्वर मंदिर के पीछे मठपारा क्षेत्र में एक व्यक्ति एक्सिस वाहन क्रमांक CG-04-PW-1372 में बैठकर चिट्टा बेचने के लिए ग्राहक तलाश रहा है। सूचना पर सहायक पुलिस आयुक्त नवनीत पाटिल और इशु अग्रवाल के नेतृत्व में टिकरापारा व आजाद चौक थाना की संयुक्त टीम ने दबिश दी और बताए गए हुलिए के व्यक्ति को पकड़ लिया। तलाशी में प्लास्टिक की झिल्ली में रखा प्रतिबंधित मादक पदार्थ बरामद हुआ। पूछताछ में उसकी पहचान आरक्षक हिमांशु वर्मन, पिता चैतुराम बर्मन, उम्र 34 वर्ष, निवासी ग्राम कुण्डा जिला कबीरधाम, हाल पता जनता कॉलोनी पुलिस लाइन रायपुर के रूप में हुई। आरोपी के खिलाफ थाना टिकरापारा में अपराध क्रमांक 119/26 के तहत एनडीपीएस एक्ट की धारा 21 में मामला दर्ज कर न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है। पुलिस का कहना है कि मामले की एंड-टू-एंड जांच की जा रही है और मादक पदार्थ के स्रोत से गंतव्य तक पूरी कड़ी खंगाली जाएगी। पुलिस उपायुक्त (पश्चिम) संदीप कुमार पटेल के निर्देशानुसार नशे के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी है। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त राहुल देव शर्मा के निर्देशन में अभियान चल रहा है। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या यह अकेले एक आरक्षक की करतूत है या नशे का नेटवर्क पुलिस महकमे के भीतर तक पैठ बना चुका है? क्या इस मामले में और भी नाम सामने आएंगे?

559 मीटर जमीन के 80 मालिक, 29 करोड़ से बढ़कर 70 करोड़ से अधिक का खेल – तहसीलदार और नायब तहसीलदार गिरफ्तार

भारतमाला में मुआवजे का महाघोटाला

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ में भारतमाला परियोजना के तहत भूमि अधिग्रहण में सामने आया मुआवजा घोटाला अब प्रदेश की सबसे बड़ी प्रशासनिक साजिशों में शुमार हो रहा है। अभनपुर क्षेत्र के नायकबंधा और उरला गांव में महज 559 मीटर जमीन के लिए सरकारी रिकॉर्ड में 80 से अधिक फर्जी मालिक खड़े कर दिए गए। राजस्व अभिलेखों में बैकडेट एंट्री, कागजी हेरफेर और कथित सिंडिकेट की सांठगांठ से मुआवजे की राशि 29.5 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 70 करोड़ रुपए से अधिक कर दी गई।

इस बहुचर्चित मामले में फरार चल रहे तत्कालीन तहसीलदार शशिकांत कुर्रे और नायब तहसीलदार लखेश्वर प्रसाद किरण को एंटी करप्शन ब्यूरो ने बुधवार को गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपी लंबे समय से गिरफ्तारी से बच रहे थे। उच्चतम न्यायालय में दायर उनकी जमानत याचिका भी खारिज हो चुकी थी।

7,500 हजार पन्नों की चार्जशीट

अब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या यह खेल केवल दो अधिकारियों तक सीमित था या इसके पीछे व्यापक स्तर पर संगठित नेटवर्क सक्रिय था। जिन 80 नामों पर मुआवजा जारी हुआ, उनकी भूमिका क्या है। क्या इस पूरे प्रकरण में किसी प्रभावशाली संरक्षण की भूमिका रही। भारतमाला जैसी राष्ट्रीय महत्व की परियोजना में सामने आए इस घोटाले ने प्रशासनिक तंत्र की पारदर्शिता और जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। जांच एजेंसियों की अगली कार्रवाई पर अब प्रदेश की नजरें टिकी हैं, क्योंकि यह मामला केवल जमीन का नहीं, शासन की विश्वसनीयता का है।

कानूनी शिकंजा

एसीबी ने दोनों आरोपियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 467, 468, 471, 420, 409, 120बी तथा भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 की धारा 7सी और 12 के तहत प्रकरण दर्ज किया है। मामले में 7,500 पन्नों का आरोप पत्र पहले ही विशेष न्यायालय में प्रस्तुत किया जा चुका है। स्थायी गिरफ्तारी वारंट जारी था और कुर्की की कार्रवाई भी लंबित है। गिरफ्तार अधिकारियों को 20 फरवरी तक पुलिस रिमांड पर भेजा गया है।

कैसे रचा गया खेल

जांच में सामने आया है कि राजस्व विभाग के कुछ अधिकारियों, पटवारियों, राजस्व निरीक्षकों और भूमाफिया के गठजोड़ ने बड़े भूखंडों को छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित कर दिया। इसके बाद सरकारी रिकॉर्ड में पिछली तारीखों में नाम जोड़कर कई नए 'भू-स्वामी' तैयार कर दिए गए। घोटाले में मृत व्यक्तियों की कथित विधवाओं के नाम पर मुआवजा निकालने और पहले से अधिग्रहित जलाशय की जमीन पर भी मुआवजा लेने जैसे गंभीर आरोप शामिल हैं। इससे शासन को करोड़ों रुपए का आर्थिक नुकसान हुआ है।

घोटाले की प्रमुख बातें

559 मीटर जमीन के लिए 80 से अधिक फर्जी नाम दर्ज, मुआवजा राशि 29.5 करोड़ से बढ़कर 70 करोड़ से अधिक, राजस्व रिकॉर्ड में बैकडेट एंट्री और दस्तावेजी हेरफेर, मृत व्यक्तियों के नाम पर भी मुआवजा उठाने के आरोप शामिल हैं।

हेमंत के धरने को लेकर विवाद गहराया

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

नगर निगम की आम सभा के समय प्रस्तावित धरना प्रदर्शन को लेकर शहर की सियासत और प्रशासनिक गलियारों में असमंजस गहराता जा रहा है। धरने की अनुमति मिली या नहीं — इस बुनियादी सवाल पर प्रदर्शनकारी पक्ष और प्रशासन के दावों में खुला विरोधाभास सामने आया है।

धरना प्रस्तावित करने वाले हेमंत ओसवाल का कहना है कि उन्होंने अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) के समक्ष विधिवत आवेदन प्रस्तुत किया था, लेकिन उन्हें न तो 'हां' और न ही 'ना' के रूप में कोई आधिकारिक सूचना दी गई। ओसवाल के अनुसार, धरने वाले दिन उन्होंने एसडीएम से सात बार मोबाइल पर संपर्क करने का प्रयास किया — चार बार कॉल रिसीव होने पर 'मीटिंग में हूं, कलेक्टर साहब से बात कर रहा हूं' जैसा उत्तर मिला, जबकि तीन बार कॉल नहीं उठाई गई।

ओसवाल का आरोप है कि आज की तारीख तक उन्हें अनुमति पर कोई स्पष्ट निर्णय नहीं मिला, जिससे वे संशय में हैं। उन्होंने इस विषय पर कलेक्टर, मुख्य सचिव और मुख्यमंत्री को भी शिकायत प्रेषित करने की बात कही है।

दूसरी ओर, एसडीएम गौतम पाटिल ने दावा किया कि उनके कार्यालय द्वारा 9 फरवरी 2026 को निर्णय पत्र जारी किया जा चुका है। प्रशासन के अनुसार, जिस विशेष स्थान पर धरना की मांग की गई थी, वह सुरक्षा एवं प्रशासनिक कारणों से उपलब्ध नहीं कराया जा सकता। पाटिल ने स्पष्ट किया कि प्रदर्शनकारियों के लोकतांत्रिक अधिकार का सम्मान करते हुए उन्हें पूर्णतः मना नहीं किया गया, बल्कि पूर्व निर्धारित स्थल पर धरना देने का विकल्प सुझाया गया है।

पत्र की तारीख पर सवाल, फोरेंसिक जांच की मांग

विवाद तब और तीखा हो गया जब प्रेस के समक्ष जारी पत्र की तारीख और परिस्थितियों पर हेमंत ओसवाल ने आश्चर्य व्यक्त किया। उन्होंने आरोप लगाया कि पत्र पर अंकित 09 फरवरी की तारीख संदिग्ध प्रतीत होती है और इसकी सत्यता की निष्पक्ष जांच आवश्यक है।

ओसवाल ने कहा कि वे जिस कंप्यूटर से लेटर टाइप किया गया उसके समय तारीख जानने हेतु संबंधित कंप्यूटर सिस्टम को फोरेंसिक लैब में जांच हेतु भेजने के लिए शासन को पत्र लिखेंगे। साथ ही, उन्होंने कार्यालय की आवक-जावक पुस्तिका, कलेक्टर कार्यालय को प्रेषण की एकनॉलेजमेंट समय उनके पावती रजिस्टर के समय तथा उच्च अधिकारियों को भेजे गए ईमेल को सत्य के निर्धारण में महत्वपूर्ण फैक्टर बताया। इस पूरे घटनाक्रम ने प्रशासनिक प्रक्रिया की पारदर्शिता पर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं। यदि पत्र 9 फरवरी को जारी हुआ, तो क्या इसकी सूचना आवेदक तक समय पर पहुंची? और यदि नहीं पहुंची, तो जिम्मेदारी किसकी? शहर में चर्चा है कि अनुमति जैसे संवेदनशील विषय पर स्पष्ट, लिखित और समयबद्ध संवाद ही ऐसे विवादों को टाल सकता है। स्थिति फिलहाल स्पष्ट नहीं है। एक ओर आवेदक का दावा है कि उन्हें कोई आधिकारिक निर्णय नहीं मिला, वहीं प्रशासन पत्र जारी होने की बात कह रहा है। अब निगाहें संभावित जांच, दस्तावेजी साक्ष्यों और प्रशासनिक स्पष्टीकरण पर टिक गई हैं।

खेल मैदान में राजनीतिक दंगल? स्टेडियम समिति के सचिव पद पर नियुक्ति से उठे सवाल

नरेन्द्र डाकलिया / राजनांदगांव

दिविजय स्टेडियम समिति में हालिया सचिव नियुक्ति को लेकर शहर में चर्चाओं और सवालों का दौर तेज हो गया है। कुतुबुद्दीन सोलंकी के संदर्भ का हवाला देते हुए रमेश पटेल को समिति का सचिव बनाए जाने के निर्णय ने खेल प्रेमियों और स्थानीय नागरिकों के बीच बहस छेड़ दी है।

स्थानीय खेल समुदाय का एक वर्ग यह सवाल उठा रहा है कि कुतुबुद्दीन सोलंकी, जो स्वयं एक प्रतिष्ठित हॉकी खिलाड़ी के रूप में जाने जाते हैं, के नाम और परंपरागत संदर्भ के आधार पर की गई यह नियुक्ति खेल भावना के अनुरूप है या नहीं। आलोचकों का कहना है कि रमेश पटेल की पहचान एक सक्रिय राजनीतिक व्यक्तित्व के रूप में अधिक रही है, ऐसे में खेल और खिलाड़ियों से उनके प्रत्यक्ष जुड़ाव पर चर्चा स्वाभाविक है।

हालांकि, कई नागरिकों और जानकारों ने रमेश पटेल के व्यक्तित्व को सौम्य, सरल और सकारात्मक बताते हुए उम्मीद जताई है कि वे अपने नए दायित्व में खेल और खिलाड़ियों के हितों को प्राथमिकता देंगे। शहर के खेल प्रेमियों का मानना है कि प्रशासनिक पदों पर बैठे व्यक्तियों की कार्यशैली ही अंततः खिलाड़ियों के भविष्य को प्रभावित करती है।

इधर, तेज तर्रार छवि वाले कलेक्टर जितेन्द्र यादव की भूमिका को लेकर भी राजनीतिक गलियारों में चर्चाएं गर्म हैं। कुछ हलकों में यह आरोप लगाए जा रहे हैं कि निर्णय पर डा. रमन सिंह का ही प्रभाव रहा, जबकि प्रशासन से जुड़े सूत्रों का कहना है कि नियुक्ति प्रक्रिया नियमों और परंपराओं के अनुरूप की गई है। कलेक्टर यादव की अब तक की कार्यशैली को देखते हुए समर्थकों का विश्वास है कि वे खेल के मैदान में राजनीति को हावी नहीं होने देंगे और जनहित को सर्वोपरि रखेंगे।

जनता की अपेक्षा क्या?

खेल जगत और आम नागरिकों की नजर अब इस पर टिकी है कि नई कार्यकारिणी खेल सुविधाओं, खिलाड़ियों के प्रशिक्षण, और स्टेडियम के विकास के लिए क्या ठोस कदम उठाती है। नियुक्ति को लेकर उठे सवालों के बीच एक स्वर यह भी उभर रहा है कि पद चाहे किसी के पास हो, केंद्र में खेल और खिलाड़ी ही रहने चाहिए।

सचिव पद की यह नियुक्ति आने वाले समय में स्टेडियम समिति की दिशा और प्राथमिकताओं को किस तरह प्रभावित करेगी, यह देखना महत्वपूर्ण होगा। फिलहाल, शहर में एक ही चर्चा है — खेल के मैदान में खेल और खिलाड़ी ही चले, राजनीति नहीं।

समीक्षा गोष्ठी सेक्टर-4 में हुआ समीक्षा गोष्ठी का आयोजन, बदलते भिलाई की चुनौतियों पर भी हुई चर्चा

इस्पात नगरी का रोचक इतिहास प्रमाणित तथ्यों के साथ रखती है किताब भिलाई जिंदाबाद : उमाकांत

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

मूलनिवासी कला साहित्य और फिल्म फेस्टिवल भिलाई, डॉ अंबेडकर एग्जीक्यूटिव फ्रेटरनिटी भिलाई. डॉ अंबेडकर वेलफेयर सोसायटी छत्तीसगढ़ और एनस्टेप के संयुक्त तत्वावधान में समीक्षा गोष्ठी का आयोजन सेल एससी एसटी ओबीसी फेडरेशन भवन, सड़क नंबर 8, सेक्टर 4 में किया गया। जिसमें लेखक एवं पत्रकार मुहम्मद जाकिर हुसैन की हालिया प्रकाशित किताब "भिलाई जिंदाबाद, कुछ किस्से-कुछ कहानियां" पर प्रमुख वक्ताओं ने अपने विचार रखे। वक्ताओं ने भिलाई को जानने समझने के लिए इसे एक जरूरी किताब बताया।

अतिथियों के स्वागत के उपरांत आधार वक्तव्य रखते हुए प्रसिद्ध कहानीकार मिर्जा हफीज बेग ने कहा कि कई मायनों में उन्हें यह किताब अपनी आपबीती भी लगती है क्योंकि भिलाई में जन्म लेने और भिलाई स्टील प्लांट का

सेवानिवृत्त कर्मी होने के नाते इनमें से बहुत से घटनाक्रम से वह खुद भी रूबरू हुए है। उन्होंने कहा कि यह किताब लेखक की पिछली कृति "वोल्गा से शिवनाथ तक" के आगे का सिलसिला है और उसमें रह गई कमियों को पूरा करती है।

वरिष्ठ रंगकर्मी राकेश बम्बार्डे ने कहा कि जिन्हें अपने शहर भिलाई से प्यार है

और जो भिलाई को जानना-समझना चाहता है, वह सभी इस किताब को जरूर पढ़ेंगे। शायर मुमताज ने भिलाई की संस्कृति को किताब के माध्यम से सामने लाने के लिए लेखक की सराहना की और चंद अशआर सुनाए। उन्होंने पटरी पार क्षेत्र में भी इस किताब पर चर्चा रखवाने का सुझाव दिया।

ऑल पीएसयू एससी-एसटी एम्प्लाइज फेडरेशन के चेयरमैन सुनील हरिशचंद्र रामटेके ने कहा कि लेखक ने पिछली किताब "वोल्गा से शिवनाथ तक" में भिलाई के योगदान पर भारतीय और रूसी लोगों के योगदान पर बेहद रोचक ढंग से तथ्यों को रखा था। वही शैली इस किताब में बरकरार है और जिस तरह लेखक ने भिलाई के शुरूआती दौर से अब तक की तमाम हस्तियों से मिलकर उनका साक्षात्कार लेकर सबके सामने प्रस्तुत किया है, यह सबके बस की बात नहीं।

उन्होंने दोहराया कि आज जिस तरह भिलाई के सामने नए दौर की चुनौतियां है, उनका सामना करने हमको अपने इतिहास के बारे जानना बेहद जरूरी है। भिलाई स्टील प्लांट के ऊर्जा प्रबंधन विभाग में जनरल मैनेजर कमल टंडन ने कहा कि भिलाई सही मायनों में लघु भारत है और इसका रोचक इतिहास जानने यह किताब सहायक होगी। कवि लक्ष्मीनारायण कुम्भकार ने कहा कि इतिहास को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना भी एक चुनौती है और इसे लेखक ने बखूबी पूरा किया है।

आकाशवाणी रायपुर के कार्यक्रम प्रमुख पंकज मेश्राम ने कहा कि एक पत्रकार का न केवल स्वतंत्र होना जरूरी है बल्कि उसका निर्भिक होना और निष्पक्ष होना उतना ही जरूरी है। वो सारे गुण लेखक में मौजूद है। भिलाई पर अगर प्रमाणिक जानकारी चाहिए तो आपको लेखक की इस किताब से जरूर रूबरू होना चाहिए।

संचालन कर रहे सेवानिवृत्त अपर कलेक्टर विश्वास मेश्राम ने कहा कि जिस भिलाई को हमने देखा और जीया है, आज वह बदल रहा है। आज के भिलाई की जो तस्वीर हम देखते हैं, उसे देखकर बहुत खुशी नहीं होती बल्कि एक दर्द सा उठता है। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में जब हमारी अगली पीढ़ी हमारे भिलाई को ढूंढना चाहेगी तो इस किताब में ही पाएगी।

बीएसपी पावर इंजीनियरिंग एंड मेंटेनेंस विभाग में जनरल मैनेजर पीएस खोब्रागड़े ने कहा कि आज सोशल मीडिया और एआई का दौर है और इंटरनेट पर हम तलाशेंगे तो इतनी प्रमाणित जानकारी नहीं मिल सकती जितनी लेखक ने अपनी किताब "भिलाई जिंदाबाद" में तथ्यों को जुटा कर दी है।

भिलाई स्टील प्लांट टेलीकम्युनिकेशन विभाग के पूर्व प्रमुख और रिटायर जनरल मैनेजर एल. उमाकांत ने कहा कि लेखक ने जिन घटनाक्रमों को इस किताब में उल्लेखित किया है, उनमें से ज्यादातर के वे गवाह रहे हैं। उन्होंने बताया कि 6 जनवरी 1986 को जिस वक्त हादसा हुआ तो तब भिलाई होटल में दूरसंचार विभाग का एक कार्यक्रम चल रहा था और एमडी के आर संगमेश्वरन भी हमारे साथ उस कार्यक्रम में ही थे। हम सबने उस धमाके की आवाज सुनी थी।

उन्होंने कहा कि भिलाई को जानने-समझने इस किताब से बेहतर माध्यम और कोई नहीं है। अंत में लेखक मुहम्मद जाकिर हुसैन ने इस किताब की सृजन यात्रा के बारे में विस्तार से जानकारी दी और कहा कि पाठकों का प्रोत्साहन ही उन्हे आगे भी भिलाई के रोचक इतिहास से रूबरू कराने की प्रेरणा देगा।

इस अवसर पर भिलाई नगर मस्जिद ट्रस्ट के सदर मिर्जा आसिम बेग, रंगकर्मी एल. रुद्र मूर्ति, मोहन कुमार नामदेव, मुकानंद साहू, बिनितोष बाला, गंगा भाऊ जांभुलकर, विजया जांभुलकर, संगीता मेश्राम, उषा मेश्राम, फैजान खान, शारिक खान, चित्रसेन कोसरे, जयश्री मोहन नागदेवे, राजेंद्र सुनगरिया और गजेंद्र सायतोड़े सहित अनेक लोग मौजूद थे। अंत में धन्यवाद ज्ञापन बीएसपी कमर्चारी और रंगकर्मी वासुदेव ने दिया।

पीआरजीआई सं.-CTHIN/25/A3746 यह हिंदी सांध्य दैनिक समाचार पत्र नई दृष्टिबिंद स्वामी एवं प्रकाशक आलोक तिवारी द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 से मुद्रित करवा कर। 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से प्रकाशित संपादक आलोक तिवारी मो. 7415469100 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार), समस्त विवादों का निपटारण न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।